ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -14 अंक - 9 अगस्त-I, 2013 (पाक्षिक) माउण्ट आबू मूल्य 7.50 रु.

आध्यात्मिक जीवन की मिसाल दादी प्रकाशमणि

जिनकी मुस्कान अनेकों के कष्ट हर लेती थी, जिनकी दृष्टि पाने के लिए लोगों के कदम रूक जाते थे, जिनके सफल प्रशासन को देख सभी प्रशासनिक अधिकारी उनसे यह कला सीखना चाहते थे, जिनकी पवित्रता व सरलता पर स्वयं भगवान भी बलिहार जाते थे, जिन्होंने अनेकों को जीवन दान दिया, जिन्होंने प्यार देकर अनेकों को जीना सिखाया - ऐसी थी महान दादी प्रकाशमणि।

जिनकी मुस्कान अनेकों के कष्ट हर लेती थी, जिनकी दृष्टि पाने के लिए लोगों के कदम रूक जाते थे, जिनके सफल प्रशासन को देख सभी प्रशासनिक अधिकारी उनसे यह कला सीखना चाहते थे, जिनकी पवित्रता व सरलता पर स्वयं भगवान भी बलिहार जाते थे, जिन्होंने अनेकों को जीवन दान दिया, जिन्होंने प्यार देकर अनेकों को जीना सिखाया - ऐसी थी हमारी महान दादी प्रकाशमणि। जिन्होंने सम्पूर्ण पवित्रता को धारण करके अपना सर्वस्व ईश्वरीय कार्य में स्वाहा कर दिया था। 25 अगस्त 2007 को वे अपना नश्वर देह त्यागकर महान परमात्म कार्य के लिए अन्यत्र चली गईं।

यों तो इस धरा पर अनेक महानात्माओं का आविर्भाव हुआ और होता रहेगा, परन्तु वे एक ऐसी महानात्मा थीं जिन्होंने अनेकों को

-शेष पेज 9 पर

दादी प्रकाशमणि - एक प्रकाश स्तम्भ

दादी जी के बारे में आज तक अनेकों के द्वारा इतना कुछ कहा और लिखा गया है कि उनको पिरो कर एक लम्बी पुस्तकमाला बनाई जा सकती है। हरेक के पास दादी जी के साथ के अनुभवों के खजाने भरे पड़े हैं। दादी जी ने किसी के साथ एक दिन, एक घण्टा या फिर एक मिनट ही क्यों न बिताया हो वह पल उस आत्मा के जीवन भर के लिए यादगार बन चुका है। दादी जी ने किसी का हाथ अपने हाथ में लेकर उसे प्यार और ममता से ओत-प्रोत रुहानी दृष्टिमात्र दी हो वह दृष्टि उस आत्मा के लिए बाबा के यज्ञ में उसे मददगार बनने के लिए आजीवन प्रेरित करती रही है।

क्या बड़ा-क्या छोटा, क्या ब्राह्मण-क्या आगंतुक, क्या भारतीय -क्या डबल फारेनर्स, क्या टीचर्स -क्या यज्ञ रक्षक भाई, क्या दीदी क्या दादी की सखियाँ, हरेक के दिल में दादी जी ने अपने रूहानी व्यक्तित्व के किसी न किसी पहलू की छटा सदा के लिए छोड़ रखी है।

दादी यज्ञ का श्वांस थीं

आज दादी हम सबके बीच साकार रूप में नहीं है पर हम, आप सभी से पूछना चाहते हैं कि ऐसा आपने कभी एक पल के लिए भी महसूस किया है? नहीं ना? बापदादा के बसाये यज्ञ की दादी जी श्वांस थी और यज्ञ की सांस अभी भी चल रही है तो इसका मतलब है कि दादी जी आज भी हम सबके बीच में हैं।

वे पारसमणी थीं

दादीजी एक ऐसी पारसमणी थीं जो जिसे छू ले उसे सोना बना देने की क्षमता रखती थी। अक्सर उन्हें एक बार मिलने वाले के मन में सवाल उठता था कि एक बार मिलकर मुझे दादी जी ने इतना भरपूर किया है तो उनके साथ सदा रहने वाली आत्मायें कितनी पद्मापद्म भाग्यशाली होंगी, जिनको हर दिन हर पल भरपूरता का लाभ मिलता होगा। उस आत्मा को यह अफसोस होता कि काश मैं इतना समय दादी जी के

-शेष पेज 4 पर

दादी विनम्रता की मूर्ति थी

ब्र.कु.गंगाधर

सन् 1978 में मुझे परमात्मा का ज्ञान मिला। इसके कुछ ही समय बाद सन् 1985 में पदयात्रा निकलने वाली थी और उसमें नागपुर क्षेत्र को 'ओम शांति भवन' का डेकोरेशन करने की सेवा मिली थी। तब मैं मधुबन पहली बार गया था। मधुबन पहुंचते ही मेरी हार्दिक इच्छा थी कि मैं दादीजी से मिलूं। उसका कारण था दादीजी की स्नेह भरी रूहानी दृष्टि जो सबमें उमंग-उत्साह का संचार कर देती थी। मैं उनकी दिव्य मुस्कान व दिव्य आभा से भरे व्यक्तित्व को प्रत्यक्ष देखने के लिए आतुर था। जब मेरी उनसे मुलाकात हुई तो जैसे मेरी सारी थकान ही मिट गई हो। ऐसा तेज था उनके व्यक्तित्व में। तब मुझे यह पहली बार अनुभव हुआ कि इस जन्म में भगवान की सेवा करना बहुत बड़े भाग्य की बात है। और मैंने मन ही मन यह निश्चय कर लिया कि अब यह जन्म मैं भगवान की सेवा में बिताऊंगा। यह संकल्प दादीजी से प्रथम बार मिलते ही उत्पन्न हुआ। जब मैं टोली विभाग में सेवा करता था तो दादी जी के साथ हर समय मिलना होता था। दादीजी नाश्ते के बाद हर रोज टोली डिपार्टमेंट में आती और टोली का एक छोटा सा टुकड़ा लेकर हमसे पूछती थी कि आज आपने अमृतवेला किया? आज बाबा ने मुरली में क्या कहा? दादीजी का इस तरह से टोली डिपार्टमेंट में आना और पूछना सचमुच में एक अनोखी शक्ति का एहसास कराती थी। दादीजी हमेशा मुझे कहती थी कि मैं आपको एक नई सेवा दूंगी। ऐसा लगभग एक महीने तक रोज सुबह दादीजी आती और वही वाक्य दोहराती थी। एक बार मैंने कहा दादीजी आप बताइये मैं कोई भी सेवा करने के लिए दिल से तैयार हूँ। तब दादीजी ने ज्ञानसरोवर के निर्माण सम्बन्धी एकाउण्ट की सेवा दी। और दादीजी ने पूछा कि आप जायेंगे ना! उस समय मुझे बहुत ही खुशी हुई कि इतनी बड़ी सेवा के लिए दादीजी ने मुझे चुना। यह ज्ञानसरोवर के कार्य के लिए यह पहला बड़ा प्रोजेक्ट था जो निर्विघ्न समय पर पूरा हुआ। ज्ञानसरोवर के निर्माण सम्बन्धी कारोबार हेतु दादीजी से रोज मिलना होता था और वे नित्य नई प्रेरणायें हमें देती थी। दादीजी ने हमारी तकलीफ, समस्याओं को इतना सहज तरीके से हल कर देती थी जैसे कि यह हुआ ही पड़ा हो। यह दादीजी की अपनी विशेषता थी कि वह खुद भी हल्का रहती थी और दूसरों को भी हल्का रखती थी और समाधान भी देती थी। यह बात मैं कभी भूल नहीं पाता।

दादीजी में स्नेह की शक्ति इतनी जबरदस्त थी की जो कोई भी उनको मिलता वह उन्हें भूल नहीं पाता था। वो तो जैसे विनम्रता की मूर्ति थी। छोटों को रिगार्ड देना, उनकी योग्यता के अनुसार ईश्वरीय सेवा में लगाना यह परख शक्ति जैसे स्वयं भगवान ने उन्हें गिफ्ट के रूप में दी हो। दादीजी समय की पाबंदी का बहुत ख्याल रखती थीं। मुझे याद है कि जब ज्ञानसरोवर के उद्घाटन की तरीख तय कर दी गई थी तो उस समय बहुत सारा कार्य बाकी पड़ा हुआ था। दादीजी रोज कार्य प्रोग्रेस के बारे में पूछती थी और राय देती थीं। ठण्डी के समय में निर्माण कार्य चल रहा था। दादीजी अक्सर वहां आकर सभी को गरम-गरम पकौड़े और हलवा खिलाया करती थी और सभी को उमंग-उत्साह से भरपूर कर देती थी। हमें याद है कि उस दिन सुबह 10 बजे हार्मनी हॉल का उद्घाटन होना था। और जहां से ऊपर हॉल में जाना था उसकी सीढ़ी का कार्य उसी दिन सुबह के चार बजे पूरा हुआ था। उस ठण्डी में भी लोगों ने बहुत ही उमंग-उत्साह से काम किया था। जब दादीजी ने उन लोगों से पूछा कि किसी को ठण्डी तो नहीं लगी, किसी को कोई परेशानी तो नहीं हुई। उनका यह पूछना कि सभी लोग अपनी थकान भूल जाते थे और उमंग-उत्साह से भर उठते थे। उस समय किसी को यह अनुभव ही नहीं

- शेष पेज 8 पर...

जहाँ पड़े कदम, वहाँ-रचा इतिहास : दादी जानकी

जब हम आबू में आए तो स्थान, वातावरण, परिस्थितियां बदलने के कारण भिन्न- भिन्न बातें परीक्षा के रूप में सामने आईं पर दादी जी को हर परिस्थिति में अचल-अडोल देखा। कभी उनको व्यर्थ संकल्प या बोल में नहीं देखा। सेवा के क्षेत्र में भी उनके जहाँ-जहाँ कदम पड़े, वहाँ-वहाँ स्थापना का नया इतिहास रचा गया। दादी जी ने कानपुर, लखनऊ, पटना, मुम्बई आदि अनेक स्थानों पर अनेकानेक आत्माओं को प्यारे बाबा के वर्से का अधिकारी बनाया।

प्यारे बाबा के अव्यक्त होने के बाद, संगठन के किले को मजबूत बनाया। सभी को धैर्य, आशा और उमंग का पाठ पढ़ाया। यज्ञ परिवार में दिल से दिल मिलाने में और दिलाराम भगवान से दिल का प्यार पाने में प्रेरणाएं भरीं। बाबा के अव्यक्त होने पर मेरे मन में प्रश्न था कि अब मुरली कौन सुनाएगा? प्यारे बाबा ने कहा, दादी (प्रकाशमणि) मुरली सुनायेंगी और पुरानी मुरलियाँ दोहराई जायेंगी। सचमुच, दादी जी ने ऐसी मुरली चलाई जो साकार बाबा की भासना हमें मिलती रही। सन् 1974 में दादी और दीदी, दोनों ने मुझे विदेश सेवा के लिए भेजा। प्यारे बाबा की श्रीमत और बड़ों की दुआओं से जर्मनी, अफ्रीका, कनाडा, करेबियन आदि स्थानों पर सेवा का बीज पड़ा। लंदन तो सेवा का मुख्य केन्द्र था ही। उन दिनों पूरे चार साल मैं मधुबन नहीं आई। हाँ, दादियाँ हमारे पास आती रहीं। सन् 1977 में दादी हमारे पास आई। वहाँ ठण्ड बहुत होती है, मैं अमृतवेला कमरे में ही योग में बैठ गई। दादी ने इशारा दिया, बाबा के कमरे में चलो ना, तब से लेकर

मैंने निरंतर ऐसी ही आदत बना ली है। दादी ने ही लंदन में ट्रैफिक कंट्रोल प्रारंभ करने का इशारा दिया। जब दादी विदेश के दौरे पर आती थीं, मुझे यही भासना आती थी कि दादी नहीं, स्वयं बाबा ही आए हैं।

डबल विदेशी भाई-बहनों को देखकर दादी हमेशा ही कहती थीं कि आप पूर्वजन्म में तो भारत में ही थे, इस अंतिम जन्म में, ईश्वरीय सेवार्थ आप इन भिन्न-भिन्न स्थानों पर, भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में आ गये हो। दादी की नेचुरल रूहानियत, उनका ईश्वरीय प्रेम और कल्प पहले की स्मृति पक्की कराने की विधि बड़ी प्रभावशाली थी। वे पहली झलक में ही किसी भी आत्मा में इतना अपनापन भर देती थीं कि दूरी या अनजानेपन का भान मिट जाता था।

यह मेरा महान् भाग्य है कि दादी ने सदा ही मुझ पर हक रखा। मैंने भी दादी की समीपता का बहुत सुख पाया है। दीदी मनमोहिनी जी ने सन् 1983 में जब देह त्याग किया तो सभी का विचार था कि शायद अब मुझे मधुबन में ही रखेंगे परंतु मीठी दादी ने ही उमंग दिलाकर मुझे विश्व सेवा पर भेजा। मधुबन मुख्यालय की ज़िम्मेवारियाँ निभाते हुए स्वयं भी विश्व सेवा पर जाती रहीं और जहां-जहां उनके कदम पड़े, वहां-वहां ईश्वरीय सेवा के नये बीज अंकुरित हुए, सेवा वृद्धि को पाती गई।

जब दादी का स्वास्थ्य ठीक नहीं था तब भी उनका मुस्कुराता हुआ चेहरा देख, कर्मातीत स्थिति की प्रेरणा मिलती रही। चेहरे पर ज़रा भी दुःख, चिंता की लहर नहीं दिखाई। जैसा बाबा हमें बनाना चाहता है, वो सबूत देखा। वे याद में भी लवलीन रहती थीं, बेहद सेवा को भी सामने रखती थीं और सर्व का सहयोग लेने की भी बड़ी सुन्दर युक्ति उनके कर्मों से देखने को मिलती थी। संक्षेप में यही कहूँगी कि बाबा की हर आज्ञा का पालन करते-करते दादी, बाप समान सबकी प्रेरणास्रोत बन गई।

दादी ने किसी की कोई बात चित्त में नहीं रखी :दादी हृदयमोहिनी

साकार बाबा इस बात पर बहुत ध्यान देते थे कि हर बच्चा, मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) बहुत ध्यान से सुने। यदि मुरली सुनते समय किसी बच्चे को उबासी आ जाती थी तो बाबा तुरन्त कहते थे इसको उठाओ, नहीं तो वायुमण्डल पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। बाबा मिसाल देते थे कि जैसे सीप पर जल की बूंद गिरती है तो मोती बन जाती है, इसी प्रकार आपकी बुद्धि पर भी ये ज्ञानामृत की बूंदें पड़ रही हैं, एक-एक बूंद ज्ञान-मोती का रूप धारण करती जा रही है। अतः हमारे में इतने मोती बाबा डालते हैं, भरपूर करते हैं मोतियों से, तो हमारा इतना ध्यान होना चाहिए। बाबा के सामने मुरली सुनने बैठे बच्चों में से, यदि किसी ने बाबा की मधुर शिक्षाएँ सुनकर चेहरे द्वारा प्रतिक्रया व्यक्त नहीं की तो बाबा कहते थे, यह कौन बुद्धू सामने बैठा है? इतना ध्यान बाबा बच्चों पर देते थे। बाबा का प्यार भी भरपूर था, तो शिक्षाएँ भी भरपूर देते थे। मान लो, किसी बच्चे ने कोई ग़लती कर दी तो बाबा उसे व्यक्तिगत रूप से बुलाकर ग़लती नहीं सुनाते थे। मुरली में ही सब सुना देते थे कि महारथी बच्चे भी ऐसे-ऐसे करते हैं, बाबा के पास रिपोर्ट आती है। ग़लती करने वाला

तो समझ जाता था कि यह बात मुरली में मेरे लिए आई है। मुरली के बाद, बाबा के कमरे में हम बहनें और भाई जाते थे जिसे चैम्बर नाम से जाना जाता था। बाबा अपनी गद्दी पर विष्णु मुआफिक लेट-से जाते थे और हम सभी बच्चे आस-पास बैठ जाते थे। मान लो, बाबा ने मुरली जिस बच्चे के लिए चलाई, वह भी बाबा के सामने चैम्बर में आ गया तो उसका मन तो अन्दर से खा रहा होता था कि बाबा अभी भी कुछ कह न दें, पर बाबा कभी नहीं कहते थे। यदि, वह हिम्मत करके बाबा के बहुत करीब भी चला जाये तो भी बाबा और ही प्यार करते थे। मुरली के बाद उस बात को कभी नहीं दोहराते थे कि बच्चे, तुमने अमुक ग़लती की है। फिर वह बच्चा भी भूल जाता था। इस प्रकार बाबा बहुत प्यार करते थे, ग़लती करने वाला बेधड़क बाबा के सामने जा सकता था, पर उसको स्वयं ही इतना एहसास हो जाता था कि भविष्य में उस भूल को कभी नहीं दोहराता था। बाबा हँसा-बहला कर उस बात को समाप्त कर देते थे, पर वह बच्चा पूरा बदल जाता था।

ऐसा ही दादी का स्वभाव था। यदि किसी छोटी बहन ने दादी जी को सुनाया कि आज मुझे बहुत रोना आया, फीलिंग आई आदि-आदि तो दादी कभी भी उसकी बात बड़ी बहन को सुनाकर उलाहना नहीं देती थीं कि तुमने छोटी बहन के साथ ऐसा-वैसा क्यों किया। हाँ, दादी जी उस छोटी बहन को ऐसा प्यार देती थीं जो उसके मन को पूरा ठीक कर देती थीं। पर बड़ी बहन को बुलाए, फिर कहे, तुमसे छोटी बहन नाराज़ है, क्या करती हो, कभी नहीं। दादी क्लास कराती थीं, सब कायदे-कानून समझाती थीं, पर व्यक्तिगत मिलन में सीधा नहीं कहती थीं कि तुमने ऐसा किया है। इस प्रकार, दादी जी दिल में कुछ नहीं रखती थीं। क्योंकि दिल में कोई भी बात घर कर जाए तो खुशी गुम हो जाती है। बाबा ने कहा है, जीवन भले जाए पर ख़ुशी न जाए।

दादी गुणों और अनुभवों की निधि

ब्र.कु.रमेश शाह

दादी प्रकाशमणि जी ने मुझे तथा मेरे लौकिक परिवार को अपने रीति से संवारा। आज मैं तथा मेरे लौकिक परिवार वाले जो भी ईश्वरीय सेवायें कर रहे हैं, उसके पीछे उनकी पालना का महत्वपूर्ण स्थान है। बातें तो अनेक हैं, समझ में नहीं आता कहाँ से शुरू करें और कहाँ अन्त करें क्योंकि लेख के रूप में लिखने की एक मर्यादा होती है, फिर भी संक्षिप्त में दादी जी के साथ के संस्मरण लिखता हूं।

दादी जी जहाँ पाँव रखती थीं वहाँ सेवा हो जाती थी

सन् 1952 में जब मेरा इस विश्व विद्यालय के साथ परिचय हुआ तब से इसके सभी अनन्य रत्नों का परिचय तो था ही और कईयों के परोक्ष व अपरोक्ष रूप से संपर्क में भी आया था। जब दादी जी और रतनमोहिनी दादी जी जापान गये, तब मुझे वह समाचार मिला और मैने दादी जी को पत्र लिखा कि श्रीमद्भगवतगीता पाठशाला के मुखिया पांडुरंग शास्त्री जी तथा उनके एक साथी जिनके साथ मेरा पहले बहुत घनिष्ठ संबंध था तथा जो बाहर के तत्वज्ञान के बहुत बड़े विद्वान हैं, भी जापान के विश्व धर्मसम्मेलन में आये हुए हैं, तो आप उनको भोजन के लिए रोज़ अपने पास बुलाना और उनकी ईश्वरीय सेवा करना। मैने शास्त्री जी को भी मुंबई में कहा था कि आप और आपके साथी जापान जा रहे हैं, वहां आपको खाने की दिक्कत होगी इसलिए मैंने ब्रह्माकुमारी बहनों को लिखा है, आप भी उनसे संपर्क करना। दोनों ने मेरी बात मानी और जापान की दस दिन की कांफ्रेंस में दादी जी ने और रतनमोहिनी दादी जी ने उन दोनों को अपने हाथ से पकाया हुआ पवित्र भोजन खिलाया और साथ ही यज्ञ का इतिहास भी बहुत विस्तार से सुनाया। परिणाम स्वरूप जब शास्त्री जी मुंबई आये तब उन्होंने मुझे कहा कि रमेश भाई, ब्रह्माकुमारी संस्था का इतिहास सुनकर जब मैंने जाना कि पुरूष प्रधान समाज ने बहनों की आध्यात्मिक उन्नति में कितनी रूकावट डाली तो मेरी आँखों में पानी भर आया। बाद में हमेशा ही शास्त्री जी का विश्व विद्यालय के साथ स्नेह भरा संबंध रहा और शास्त्री जी प्यारे ब्रह्मा बाबा तथा प्यारी मातेश्वरी जी से मिलने भी आये। इस प्रकार से, अपरोक्ष रूप से दादी जी के द्वारा सेवा हुई, उसका मैं साक्षी हूँ।

दादी जी से पहली प्रदर्शनी के सभी चित्रों की समझानी फाइनल की

बाद में दादी जी जब पटना में थे और ब्रह्मा बाबा जब मुंबई आते थे तो दादी जी भी मुंबई का चक्कर लगाती थीं परंतु मेरा इतना घनिष्ठ संबंध दादी जी के साथ नहीं था क्योंकि ब्रह्मा बाबा की उपस्थिति में ज़्यादा कारोबार ब्रह्मा बाबा से ही होता था। परंतु जब सन् 1964 में हम सबने प्रदर्शनी के चित्र बनाने का कार्य शुरू किया तो पहला-पहला चित्र 'सच्चा वैष्णव कौन?' बनाया गया और ब्रह्मा बाबा के पास वह चित्र लिखत सहित प्रमाणित कराने के लिए भेजा गया। दो दिन में ही ब्रह्मा बाबा ने उस लिखत में सुधार कर दुबारा अच्छे अक्षरों में लिखवा कर भेजा तो मैंने ब्रह्मा बाबा को पत्र लिखा कि बाबा, ये आपके अक्षर नहीं हैं, ये किसने लिखा है? तो ब्रह्मा बाबा ने लिखा कि बच्चे, कुमारका बच्ची यहां है, उसी ने लिखत को सुधार करके भेजा है। तो हमने ब्रह्मा बाबा को लिखा कि जब हमारे चित्रों की लिखत कुमारका बहन को ही फाइनल करनी है तो क्यों नहीं आप कुमारका बहन जी को अपने प्रतिनिधि के रूप में मुंबई भेज दें। बाबा ने हमारी बात को माना और टेलीग्राम किया कि कुमारका बच्ची को रिसीव करो। इस प्रकार प्रदर्शनी के पहले चित्र से ही दादी जी का पूर्ण सहयोग प्रदर्शनी की सेवा के लिए मिला और दादी जी ने ही प्रदर्शनी के सभी चित्रों की समझानी फाइनल की। जब पहली प्रदर्शनी का उद्घाटन महाराष्ट्र के राज्यपाल मंगलदास पकवासा ने किया तब दादी जी और ऊषा बहन ने उन्हें समझाया और उनसे ओपिनियन लिखवाया। गवर्नर ने लिखा, यह अद्भुत प्रदर्शनी है। बाद में सभा में संबोधन के लिए भी गवर्नर गये। इस प्रकार प्रदर्शनी सेवा में ओपिनियन लिखवाने की शुरूआत भी दादी जी ने की। बाद में मातेश्वरी जी का मुंबई आना हुआ और मातेश्वरी जी ने दादी जी तथा सभी महारथी भाई-बहनों को बुलाकर प्रदर्शनी की सेवा विहंग मार्ग की सेवा है, यह प्रस्तावित किया।

इतने में ही ब्रह्मा बाबा को ईस्टर्न ज़ोन की सेवा के लिए अच्छे हैण्ड्स की जरूरत थी तो दादी निर्मलशान्ता ने कोलकाता जाने की ऑफर ब्रह्मा बाबा को की और ब्रह्मा बाबा ने फौरन उस बात को स्वीकार कर दादी निर्मलशान्ता को वहाँ भेजा और दादी प्रकाशमणि को गामदेवी सेन्टर (उस समय वाटरलू मेन्शन) का इंचार्ज बनाया। तब से दादी प्रकाशमणि जी के साथ हमारे लौकिक परिवार का संबंध जुटा और वह संबंध दादी के अव्यक्त होने तक इतना ही घनिष्ठ रहा।

गामदेवी सेंटर का स्थान दादी जी ने ही चुना था

वाटरलू मेन्शन में जब सेवाकेन्द्र था, तब वहां से उसको स्थानांतरित करने की बात चल रही थी। हम मकान ढूंढ़ रहे थे। दादी जी, मैं और ऊषा बहन कार में गामदेवी सेन्टर के पास ही खड़े थे। मैंने दादी जी को पूछा, कहाँ पर मकान के लिए कोशिश करें? उस समय गामदेवी का दारू-उल-मुलक भवन नया बना ही था, उसके प्रति दादी जी ने इशारा किया कि ऐसे मकान में अगर सेन्टर खुल जाये तो बहुत अच्छी ईश्वरीय सेवायें हो सकती हैं। ड्रामा प्लैन अनुसार उसी भवन में एक फ्लैट हमने बुक कराया था तो हमने अपने लौकिक परिवार से चर्चा करके दूसरे दिन दादी जी को वह फ्लैट ईश्वरीय सेवा में देने का ऑफर किया। दादी जी को वह फ्लैट बहुत ही पसंद आया और कहा कि हम आबू चलते हैं, बाबा से स्वीकृति लेकर इस फ्लैट से सेवा शुरू करेंगे। दो दिन पश्चात् हम आबू गये, ब्रह्मा बाबा से स्वीकृति ले वापिस आये और वाटरलू मेन्शन से सेवाकेन्द्र का स्थानांतरण गामदेवी में हो गया और उसी स्थान पर रहकर ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने तक दादी जी ने सेवायें की। इस प्रकार सन् 1964 से 1968 तक अर्थात् पाँच वर्षों तक दादी जी से निरंतर पालना लेने और आगे बढ़ने का सौभाग्य हमें मिला।

दादी जी हमारे परिवार की अलौकिक माँ थीं

सन् 1977 में बड़ी दीदी मुंबई आयी हुई थीं, उस समय दादी प्रकाशमणि जी का विदेश यात्रा का कार्यक्रम बन रहा था। बड़ी दीदी ने मुझे कहा, रमेश, आप आबू चलो, दादी जी का

(शेष पेज 11 पर)

1990 : बेहतर समाज के लिए अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन पर संयुक्त राष्ट्र संगठन के अपर सचिव सेफरनचुक व पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी, दादी प्रकाशमणि के साथ दीप प्रज्जवलित करते हुए।

राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम ज्ञानसरोवर में आयोजित समारोह के दौरान दादी प्रकाशमणि से स्नेह प्रदर्शित करते हुए।

भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पी.वी.नरसिम्हा राव, राजस्थान के राज्यपाल डॉ.चेन्ना रेड्डी तथा दादी प्रकाशमणि।

1984 : विश्व शान्ति महासम्मेलन में राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह, दादी प्रकाशमणि तथा अन्य।

आध्यात्मिक सशक्तिकरण सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए दादी प्रकाशमणि, मंच पर काशी के जगतगुरु।

राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के साथ दादीजी।

दादीजी से आशीर्वचन लेते हुए गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी।

यू.पी.ए.अध्यक्षा सोनिया गांधी के साथ दादीजी

दादी मनोहरइन्द्रा, दादी गंगे, दादी रतनमोहिनी, दादी हृदमोहिनी, दादी जानकी, दादी प्रकाशमणि, दादी निर्मलशांता एवं दादी चन्द्रमणि समूह चित्र में।

दादी प्रकाशमणि...

-पेज 1 का शेष

साथ बिता पाता और उनसे हर पल कुछ सीखता। हमारे दिलोदिमाग से दादी जी की याद को निकाला नहीं जा सकता परन्तु उनके स्मृति दिवस पर केवल उनको प्यार से यादकर आँसू बहाना या भावुक हो जाना क्या इससे दादी जी खुश होंगी ? या फिर दादी जी के गुणों को और कर्तव्यों को, उनकी उम्मींदों और आशाओं को, उनके रहे हुए अधूरे वृहद कार्य को, हमारे द्वारा पूर्ण होते हुए देखकर खुश होगी ?

इस बार हम उनका छठा अव्यक्ति दिवस मना रहे हैं तो यह घड़ी हमारे लिए केवल दादी जी को याद करने की ही नहीं अपितु अपना आत्म-विश्लेषण करने की है। अपने को शान्ति की गहराई में ले जाकर अपनी अन्तरात्मा को टटोलने की यह घड़ी है। दादी जी के गुण और विशेषताओं का वर्णन करते हुए हमारी जुब्रान थकती नहीं हैं। तो क्या उनकी विशेषताओं को मैंने भी अपने जीवन में धारण किया है ? अगर हाँ तो यही दादी जी को सच्ची खुशी दिलाने वाली हमारी स्मृतियां याद होगी।

दादी जी की याद में हम प्रकाश स्तम्भ के आगे जाकर मौन खड़े रहते हैं। उस समय दादी और उनके द्वारा मिली हुए सर्व शिक्षायें, चित्र फीती की तरह एक-एक कर अर्न्तदृष्टि के आगे सरकती जाती है। और हमारे यादों के बगीचे के फूलों को नयी सुन्दरता और खुशबू से भर देती हैं। उस चित्र फीती का पहला चित्र सामने आता है और दादी जी, हम आप जैसी एक आम व्यक्ति के रूप में देखते हैं।

दादी जी - असामान्यता मे सामान्यता

जब इन्सान महान बनता है तो कभी-कभी अपनी निजी मानवता को छोड़ देता है परंतु दादीजी ने महानता के आसमान को छू लेने के बावजूद अपने अन्दर के इन्सानी जज्बे को सदा कायम रखा। एक सामान्य व्यक्ति या मानव के रूप में दादी जी को जब हम देखते है तो इन्सानियत और मानवता का अर्थ समझ में आने लगता है। दादी जी के इस बेहद निजी पहलू पर हमारी नजर शायद न गई हो लेकिन इस बात पर भी अगर हम गौर करें तो दिखता है कि कैसे दादी जी हरेक छोटे-बड़े साधारण से साधारण व्यक्ति का खास ध्यान रखती थी। सर्दी हो या बारिश हर आने वाले छोटे-बड़े व्यक्ति के गर्म कपड़े या बरसाती का ध्यान दादी जी रखती थी। खासकर बूढ़ी माताओं को विशेष एक-एक को बुलाकर उनके आरामदायक आवास-निवास और स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ कर उन्हें सुविधा दिलाई है।

यज्ञ में कोई बीमार हो या अस्पताल में कोई भी पेशेन्ट हो, दादी जी ने स्वयं मिलकर या किसी को भेजकर हमेशा उनका ख्याल रखा है। किसी पर भी उनके किसी निर्णय से अन्याय न हो इस बात का दादी जी ने सदा ध्यान रखा है। दादी जी ने कभी भी किसी के द्वारा कहीं सुनी बातों पर विश्वास कर किसी भी आत्मा के प्रति अपना मत नहीं बनाया और उस व्यक्ति को उस नजर से नहीं देखा। चाहे आबू निवासी हो या यज्ञ का कोई नौकर, हरेक के अच्छे-बुरे समय में दादी जी को उन्होंने अपने साथ खड़ा महसूस किया। जिस पर किसी भी नजर नहीं पड़ती थी ऐसे कोने में चुपचाप खड़े व्यक्ति पर दादी जी की नजर पड़ती थी और वह खास उस व्यक्ति का ख्याल रखती थी। मतलब कि दादी जी के इन्सानी जज्बे के विशाल वृक्ष की छाया से कोई भी वंचित नहीं रहा है।

दादीजी को एक कुशल प्रशासिका, आदर्श टीचर, सभी की प्रेरणास्रोत, ममतामयी मां, पालनहार पिता, अपनी दूरदृष्टि से यज्ञ को आसमान की ऊंचाईयों तक पहुंचाने वाली निश्चय की महामेरू के रूप में हर किसी ने देखा है। परन्तु एक आदर्श विद्यार्थी का उनका रूप भी हम अनदेखा नहीं कर सकते। किसी से भी कोई नई बात सीखने और समझने में उनको कभी भारी नहीं लगता था। उम्र से इतनी बड़ी होने के बावजूद अभी-अभी आई हुई कुमारी को सखीपन का अनुभव वह बड़ी सहजता से करा देती थी। मुरली को पढ़कर ऐसा आत्मसात् कर लेती थी कि जब वे सुनाती थीं तो सुनने वाले को भी वह स्वत: आत्मसात् हो जाती थी। 70 साल से नियमित ज्ञानयोग की पढ़ाई करते रहने के बावजूद पढ़ाई के प्रति उनके उत्साह व लगन को किसी नये विद्यार्थी की तरह ही तरोताजा देखा गया।

और हाँ किसी की नजर तीक्ष्ण हो तो उनके अन्दर छिपे हुए इनोसेन्ट बच्चे को उसने अवश्य देखा होगा। किसी को हँसाकर खुद खिलखिलाते हुए हँसना उनकी आकर्षक छवि में चार चांद लगाता था। दादी जी के व्यक्तित्व में जो चुम्बकीय आकर्षण था उसकी शुरुआत ही उनकी पवित्र और स्वच्छ मुस्कराहट से होती थी। दादी जी की उपस्थिति मात्र आसपास की हवाओं पर इतनी रुहानी खुश्बू फैला देती थी कि दूर कोने में बैठा व्यक्ति भी महसूस करता कि वह कहीं आसपास ही हैं।

हरेक के अन्दर छिपे हुए गुणों की अचूक परखकर उसके उस गुण या कला को बाबा की सेवाओं में लगाने की कला को केवल उन्हीं से सीखी जा सकती है। वे न केवल उस व्यक्ति के गुण और कला की परख करती थी बल्कि कद्र भी करती थी और समय पर सबके सामने उसका वर्णन भी करती थी। अन्त में शारीरिक अस्वस्थता के कारण भल वह मुख से कुछ बोल नहीं पाती थीं लेकिन उनकी प्यारी सी मुस्कराहट को हम सभी मिस करते लेकिन उनकी नजरों में हमें पहचानने के चिन्ह दिखाई देते। उस समय भी उनकी एक दृष्टि को पाने के लिए हजारों लोग शान्ति और धैर्यता से लम्बी कतार में खड़े रहते थे। दादी जी ने अन्तिम श्वांस तक हर पल बाबा की सेवा में बिताया। आज भी उनकी ही सेवाओं का मीठा फल हम सब खा रहे हैं

ऐसी हमारी प्यारी दादी प्रकाशमणी, प्रकाश स्तम्भ बनकर आज भी हम सबके साथ और सन्मुख है। उनके जीवन और जज्बे को हमारा शत् शत् प्रमाण और श्रद्धांजली।

दूसरों से अपेक्षा रखने का स्वभाव हमारी खुशी को प्रभावित करता है

प्रश्न :- दूसरों की अपेक्षा का मतलब क्या होता है ?

उत्तर :- अपेक्षा का मतलब दूसरे के द्वारा भविष्य में किये जाने वाले व्यवहार को पहले बता देना कि मैं विश्वास करती हूँ कि आप ऐसा करेंगे। आप क्या करने वाले हैं उसका मैं पहले से ही अनुमान लगा लेती हूँ।

प्रश्न :- मैंने तो आपके व्यवहार का पहले से ही अनुमान लगा लिया था। और जब आपका व्यवहार वैसा नहीं हुआ, मैंने जो आपसे अपेक्षा बनाकर रखी थी तो मैं कहती हूँ कि आप मेरी उम्मीदों पर खरा नहीं उतरे। हमें अपने-आप से तार्किक रूप से ये पूछना पड़ेगा कि यह उपाय कितना अच्छा है! अब प्रश्न उठता है कि 'मैं कौन हूँ' ?

उत्तर :- 'मैं कौन हूँ' यह तो स्वयं एक प्रश्न है, फिर भी लोग कहते हैं कि क्यों पैरेंट बच्चे से उम्मीद न करे, पति-पत्नी एक-दूसरे से उम्मीद न करे, टीचर अपने स्टूडेंट से उम्मीद न करें, ये एक ऐसी चीज है जिसे छोड़ना बहुत ही कठिन है।

प्रश्न :- वास्तव में हमें वो तब तक पता नहीं चल पाता जब तक की वो फेल नहीं होता कि मैंने उससे क्या उम्मीद किया था।

उत्तर :- अब सारे दिन में हमें ये देखना है कि हमारी अपेक्षा का आधार क्या है। आप जिस तरह से बोलते आये हैं मेरे साथ कल भी इसी तरह से बात करेंगे। लेकिन कल आपने एक अलग तरीके से बात की जो कि मेरी आशा के एकदम विपरीत थी। किसी के अतीत के साथ उसको तुलना करना की पहले ये जैसे बात करते आये थे अब भी वैसा ही करेंगे। यह मैं पहले से ही दूसरे के लिए निर्णय ले लेती हूँ और फिर जब वो वैसा नहीं करते हैं तो मैं हीन भावना से ग्रसित हो जाती हूँ। अब हम दो बातों में फंसते हैं - एक तो औरों से अपेक्षा करना और दूसरा दूसरों की उम्मीदों को पूरा करना। ये दोनों चीजें हमारी खुशी को बहुत ज्यादा प्रभावित करती है।

-ब्र.कु.शिवानी

प्रश्न :- बच्चे कितनी बार कहते हैं, पालक कितनी बार बोल रहे होते हैं कि मुझसे क्या चाहिए या आप मुझसे क्या उम्मीद करते हैं ?

उत्तर :- इन दोनों उदाहरणों में क्या है ? यदि आप मेरी अपेक्षा को पूरा करते हैं तो मैं खुश रहूंगी, यदि मैं आपके उम्मीदों को पूरा करती हूँ तो क्या आप खुश होंगे ? इन दोनों चीजों में अपेक्षा का खुशी के साथ सीधा संबंध है। हमें ये देखना पड़ेगा कि हमने अपनी खुशी को किन चीजों पर निर्भर कर दिया है कि भविष्य में ये क्या करेंगे, कैसे बात करेंगे, कैसे व्यवहार करेंगे, वो मैं पहले आशा करती हूँ और उसके ऊपर अपनी खुशी को निर्भर कर देती हूँ, फिर वो वैसा नहीं करते तो मैं दु:खी हो जाती हूँ।

प्रश्न :- अब हम बिल्कुल उसी धारणा पर आ गये हैं जिस पर हमारा पूरा ढांचा खड़ा है। अभी तक आप मुझसे एक तरह से व्यवहार करते हुए आये, एक तरह से बात करते हुए आये। अगर आप मुझसे अलग तरह से बात करोगे तो यह नैचुरल है कि मुझे इससे दु:ख पहुंचेगा।

उत्तर :- नैचुरल है कि दु:ख पहुंचेगा क्योंकि आपने मेरे व्यवहार को देखकर अपना भरोसा(बिलीव सिस्टम) बदल लिया। ये बहुत मुश्किल हो जाता है कि हम भविष्य के व्यवहार पर अपनी खुशी को निर्भर कर देते हैं तो वो खुशी कैसे स्थायी रहेगी ? वो तो एक भविष्य का कल्पना है जिसे हम भविष्य से संबंधित कह सकते हैं। अगर हमारी वो कल्पना सही नहीं निकली तो मेरी खुशी गई। और फिर मैं उसका दोष किस पर डाल देती हूँ - आप पर, क्योंकि आपने मेरी अपेक्षाओं को पूरा नहीं किया। मैंने अपेक्षा पहले निर्मित क्यों किया ?

दादीजी के वरदानी बोल जीवन का आधार बने

ब्र.कु.आत्मप्रकाश

प्रेस में जो भी चीज़ें छपती थीं, उन्हें दिखाने मैं अक्सर दादी जी के पास जाता था । जब ज्ञानामृत पत्रिका लेकर जाते थे तो चित्र,लेख आदि सब बहुत ध्यान से देखती थीं और हमेशा पूछती थीं कि कितनी पत्रिकाएँ छपती हैं? उस समय संख्या एक लाख साठ हजार थी। जब मैं यह संख्या बताता था तो बहुत प्रसन्न होती थीं। फिर एक पत्रिका का खर्च और उस पर बचत का भी पूरा हिसाब पूछती थीं। इस प्रकार, साहित्य के संबंध में उनका अमूल्य मार्गदर्शन और प्रोत्साहन मिलता रहता था। कारोबार में द्विगुणित हो जाता था। बिन माँगे दादी जी सभी सुविधाएँ प्रदान करती थीं। हमारे पास पहले बाइंडिंग के लिए अलग से स्थान नहीं था। एक ही जगह छपाई, बाइंडिंग आदि होती थी। दादी जी एक बार मशीन का उद्घाटन करने आईं। जब दादी ने देखा कि जगह कम है और कारोबार बहुत विस्तृत, तो स्वयं ही बाइंडिंग के लिए एक पूरा हॉल प्रदान कर दिया। हमारे बिना कहे, हर सुविधा प्रदान करने में दादी जी हमेशा पूरी मददगार बनकर रहती थीं। दादी जी के वरदानी बोल आज जीवन का आधार बनकर इसे निर्विघ्न आगे बढ़ा रहे हैं और आगे भी बढ़ाते रहेंगे। दादी जी की गुणमूर्त छवि अव्यक्त होते भी साकार की भाँति दिल में समाई हुई है और प्रेरित, उत्साहित कर रही है। उनकी दिलचस्पी देखकर हमारा उमंग

उदारता के कारण दादी दुआओं से भरपूर थी

ब्र.कु. शीला

सन् 1987 में प्रथम बार गुवाहटी में मेले का आयोजन किया गया था। उस समय यहाँ हैंड्स थोड़े थे। दादी जी ने जानकी दादी जी को मेले का उद्घाटन करने भेजा था, उस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री को आना था। उस अवसर पर मैने दादीजी के विशाल हृदय एवं उनकी उदारता देखी। दादी जी ने खुद ही सभी ज़ोन की बहनों को प्रोत्साहित करके हमारे पास भेजकर सहयोग दिया। एक बहन को तो बस से उतार कर भी कहा कि तुम्हें हर हालत में जाना है, मदद करना है। सचमुच दादी ने दूर बैठकर मनसा शक्ति और सहयोग देकर मेले को सफल बनाया। लगभग सभी बड़ी बहनों तथा बृजमोहन भाई जी को भी भेजकर हमारे उमंग को बढ़ाया। कहने का तात्पर्य यह है कि दादी जी स्वयं भी सदा उमंग-उत्साह में रहतीं और हम सबमें उमंग-उत्साह ऐसा भरती थीं कि हम किसी भी कार्य को करने के लिए तैयार हो जाते थे। वे सदा कहती थीं, हिम्मत रख, बाबा बैठा है, दादी है ना! कोई भी चीज़ की आवश्यकता हो तो बताना। कुछ खाने का दिल हो तो भी बोलना, संकोच नहीं करना।

दादीजी के दिल में एक बाबा ही समाया हुआ था

ब्र.कु. सत्यवती

दादी जी के साथ रहने का हमें बहुत चांस मिला,उनके साथ की अनेक यादें समाई हुई है। समय प्रति समय वे स्मृति में आती रहती हैं। दादी जी बहुत सरल और मधुर स्वभाव वाली थी। कोई भी बात को जल्दी स्पष्ट और हलका कर देती थी। जब वे तिनसुकिया पहली बार आई थीं, तब यहाँ सेवाकेंद्र का कोई स्थायी भवन नहीं था। तब दादी जी ने कहा कि तिनसुकिया मुख्य स्थान है, यहाँ पर कोई स्थायी भवन बनना चाहिए। इसी वरदानी बोल के प्रभाव से बहुत ही कम समय में भवन बनकर तैयार हो गया, जिसका उद्घाटन दादी जी के ही कर कमलों से हुआ। दादी जी के दिल में बाबा ही समाया था। वे कभी भी अपनी महिमा स्वयं नहीं करती थी। दादी जी की मातृवत् पालना का क्या कहना, जब भी तिनसुकिया से चार-पाँच दिन ट्रेन में सफर कर के मधुबन पहुँचते थे तो रास्ते का सारा समाचार पूछती थी। ऐसा लगता था कि जैसे माँ, बच्चों से सारा हाल-चाल पूछ रही है और सचमुच तब रास्ते की सारी थकान दूर हो जाती थी।

दादीजी फरिश्ते समान दिखाई देती थीं

ब्र.कु. नीलम

बचपन में ही दादी जी की पालना का सौभाग्य मिला। दादी को देखकर मुझे ऐसा लगता था कि मैं भी अपना जीवन ऐसा बनाऊँ। दादी की ममता भरी दृष्टि बहुत ही शक्ति देती थी। दादी कहती थीं, नीलू बड़ी गम्भीर और सयानी है। दीदी-दादी ने मुझे दिल्ली, पांडव भवन में सेवा के लिए भेजा। फिर दादी ने मुझे मेहसाना सेवा के लिए भेजा। कुछ समय के बाद दादी ने कहा कि नीलू पाटन में ही रहेगी। मुझे हाँ जी का पाठ पक्का था। 2005 में मुझे कैन्सर की शिकायत हो गई। दादी ने हमें मुम्बई ऑपरेशन के लिए भेजा। उस दौरान भी ऐसा अनुभव हुआ कि जैसे दादी एकदम फरिश्ते रूप में हमारे सामने आकर खड़ी हो गई हों और मुझे दृष्टि दे रही हों, एकदम मेरे मुख से निकला, देखो दादी आई।

दादीजी दूरांदेशी बुद्धि से सम्पन्न थीं

दादी जी साकार ब्रह्मा बाबा के विशेषताओं की प्रतिमूर्ति थीं। दादी जी के हृदय में विश्व की सभी आत्माओं के प्रति असीम आत्मिक स्नेह था। दादी, यज्ञ के सभी भाई-बहनों पर विश्वास रखती थीं। उनके इस विश्वास तथा प्यार ने यज्ञ के सभी भाई-बहनों में भी अपनी-अपनी विशेषताओं की एक अद्भुत एवं कलात्मक रूप में जागृति पैदा कर दी। उनके अद्भुत आत्मिक प्यार, विशाल हृदय एवं दूरांदेशी बुद्धि का ही सबूत है कि यज्ञ आज अपनी विशाल चरम सीमा पर पहुँच गया है। दादी जी आध्यात्मिक ज्ञान एवं योग के साथ यज्ञ के सभी भाई-बहनों के लिये खेलकूद व मनोरंजन कार्यक्रम के प्रति भी बहुत रूचि रखती थीं। यज्ञ के सभी भाई-बहनों को अपनी-अपनी योग्यता अनुसार व्यस्त भी रखती और खुश भी रखती थीं। दादी यज्ञ के शासन कार्यों को अधिकार रूप में नहीं बल्कि परिवार के रूप में बहुत प्यार से स्वयं करके सभी को सिखाती थीं और सभी का उत्साह उन सभी कार्यों को करने के लिए बनाये रखती थीं। जटिल समस्याओं में वे सभी की राय और सभी को विश्वास में लेकर ही कार्य करती थीं।

ब्र.कु.शशि

सबको स्नेह व रिगार्ड देकर आगे बढ़ाया

दादी जी ने तीन बार मालवीय नगर की इस भूमि को अपनी दृष्टि से निहाल किया। जब पहली बार नया मकान लिया था तो वह तीन सौ गज का, दो कमरों का छोटा सा सेंटर था। तब दादीजी आए थे विदेश यात्रा से लौटते समय। इस सेवास्थान को उन्होने अंदर व बाहर से अपनी वरदानी और मीठी दृष्टि दी और बेहद शुभभावनाएं, शुभकामनाएं व उमंग-उत्साह दिलाया। दादी ने हाथ पकड़कर कहा, ''जहाँ बाबा है, वहाँ सब कार्य सफल होंगे।'' उनमें सचमुच एक माँ का रूप था। चेहरे पर सदा मुस्कुराहट और मुख पर सदा बाबा। दूसरी बार दादी तब आई जब मुझे हार्ट अटैक आया। दादी ने आकर हमें गले लगाया, हाल पूछा और बहुत-बहुत प्यार दिया। हर आत्मा के प्रति अतुलनीय स्नेह व सहयोग था दादी में। तीसरी बार दादीजी का दो दिन रहना हुआ कालकाजी में दस दिन के लिए बड़ा मेला लगाने के अवसर पर। दादी जी के आने से भण्डारे भरपूर हो गये। हम दादी को समय भी नहीं दे पाए क्योंकि मेले की सेवाओं में व्यस्त थे, पर हमारी निर्माणचित्त दादी ने बहुत खुशी से बेहद की दुआओं से सहयोग दिया। उसके बाद जो भी सेवाओं के विस्तार हुए और जो विशेष आत्माएं सहयोगी बनीं, वो सब कराने वाला बाबा और हमारी मीठी दादी थीं। दादी ने सिखाया कि बाबा को आगे रखकर हर कार्य में सफल होते जाएं और सदा सबको स्नेह और रिगार्ड देकर आगे बढ़ाते जाएं।

ब्र.कु. सुंदरी

सेवा में अथक व कर्मयोगी थीं दादीजी

14 वर्षों तक मुझे दादी जी के साथ यज्ञ कारोबार संभालने में सहयोग देने का मौका मिला। मैं देखती थी कि दादी जी कितनी प्रकार की सेवाएं करती थीं। अभी-अभी मेहमानों से मिलना, अभी-अभी यज्ञ कारोबार, ख़रीदारी आदि के कामकाज को देखना, फिर सेन्टरों से आये हुए भाई-बहनों को सौगात देना, फिर प्रोग्राम में प्रवचन देना, बी.के. भाई-बहनों को क्लास कराना आदि-आदि। पता नहीं, कैसे दादी जी सब कुछ एक्यूरेट करती थीं। जिस समय जिस कार्य में होती वहाँ पूरा फोकस रहती, कार्य पूरा हुआ, वहाँ से डिटैच हो जाती और नये कार्य में इन्वोल्व हो जातीं। यह उनकी आन्तरिक साधना थी, देह से न्यारा होकर आत्मभिमानी स्थिति का अभ्यास और एक परमात्मा पिता के प्रति सम्पूर्ण समर्पणमयता की तपस्या का ही परिणाम था।

ब्र.कु. गीता

गजब का आत्मविश्वास था दादीजी में

एक बार पांडव भवन में ग्रेजुएट कुमारियों की भट्ठी चल रही थी। हरिद्वार से कुछ संन्यासी आश्रम की मुलाकात के लिए आये थे। उन्होंने हमारी क्लास को देखा, फिर आकर के दादी जी से बातचीत करते हुए कहा -'आपने इन भोली-भाली बच्चियों को भरमाकर रख लिया है। इन्होंने कहाँ संसार देखा है?' दादी जी ने कहा -' देखो, मैं आपके सामने बैठी हूँ। आप वहाँ से किसी भी कुमारी को बुलाओ, आपको जो प्रश्न पूछना है, पूछ सकते हैं।' दो-तीन बहनों को बुलाया गया, उसमें मैं भी थी। दादी जी के सामने ही एक सन्यासी इंटरव्यू ले रहा था। अनेक प्रश्न पूछ रहा था। दादी जी केवल मधुर स्मृति के साथ देख रही थी। सभी प्रश्नों के संतोषजनक जवाब सुनकर वे संन्यासी खुश हो गए। दादी जी के प्रति सम्मान से उनका सिर झुक गया।

ब्र.कु.निरंजना

विशाल संगठन के एकता की सूत्रधार दादी प्रकाशमणि

दादी जी साथ दीदी मनमोहिनी जी।

दादी केवल आदेश नहीं देती थी बल्कि खुद साथ रहकर सहयोग देती थी

ब्र.कु.मोहिनी

कभी दादी जी ने किसी को उलाहना नहीं दिया, हमेशा प्यार की भासना दी। कभी यह नहीं कहा कि मेरे पास समय नहीं है। बाबा के नियम, धारणाओं पर पक्की होकर चलती थीं। सारा दिन दादी योगयुक्त अवस्था में रहकर कारोबार में व्यस्त रहती थीं। दादी आदेश देकर चली जाएं, ऐसा कभी नहीं हुआ। हम कहते थे, दादी, आप जाओ, हम कर लेंगे, पर दादी कहती थीं, आप सेवा कर रहे हो,मुझे नींद ही नहीं आती है। बाबा मुझे सोने नहीं देता है। कहता है, जाओ बच्चे सेवा कर रहे हैं। बैठेंगी, उमंग-उत्साह दिलायेंगी, टोली खिलायेंगी, पर ऐसे ही छोड़ कर नहीं जायेंगी। जब ओम् शांति भवन बन रहा था तो सामने जंगल था, छोटी-छोटी पहाड़ियां थीं। जब पत्थर तोड़े जाते थे तो रात में सभी भाई-बहनों को लेकर दादी स्वयं जाती थीं और पत्थर उठाती थीं। दादी स्वयं भी उठाती थीं। हम कहते थे, दादी बैठ जाओ, पर वो बैठती नहीं थी, दो-चार पत्थर ज़रूर उठाती थीं। सारी रात हमारे साथ बैठी रहती थीं। करती भी थीं और कराती भी थीं। ओम् शान्ति भवन की एक-एक ईंट में दादी की भावनाएँ समाई हुई हैं।

दादी के सामीप्य में थकान की अविद्या होती थी

ब्र.कु.मुन्नी

दादी जी के अंग-संग रहने के कारण किसी भी योग्यता में पारंगत होने के लिए मुझे कोई खास मेहनत नहीं करनी पड़ी। जैसे पारस के संग रहकर लोहा भी पारस बन जाता है, ऐसे दादी जी के संग रहकर मैं भी योग्य बन गई। सुबह से सायंकाल तक की व्यस्त दिनचर्या में सैकड़ों बार उनके सम्मुख जाना होता, उनकी प्यार भरी दृष्टि पड़ती और मेरे अंदर उमंग-उत्साह लहरें मारने लगता। उनके सामीप्य में थकान किसे कहते हैं, मैंने नहीं जाना। मुझे महसूस होता रहा कि ये नज़रें दादी जी की नहीं, स्वयं भगवान की हैं, जो मुझे निहाल कर रही हैं। उनके स्पर्श मात्र से दिव्य शक्ति का मुझमें संचार होता था। ओम् शांति भवन, ज्ञान सरोवर, शान्तिवन आदि सभी यज्ञ के बड़े-बड़े भवनों को सजाने-संवारने का पूरा प्रबंध दादी जी ने मुझे सिखाया। दादी जी ख़रीददारी की चीज़ें खुद बैठकर लिखवाती थीं। दादी जी की हर आज्ञा को साकार करने में मैं दिल से जुट जाती थी, मुझे बहुत खुशी मिलती थी।

दादी जी बहुत ही रहमदिल और ममता की मूरत थीं। दादी जी कभी कोई बात चित्त पर नहीं रखती थीं। मैं छोटी थी, जब कोई गलती कर देती थी तो दादी बहुत प्रेम से समझाती थीं। क्षमा का सागर थीं, हर गलती को भुला कर प्रेम से आगे बढ़ाती थीं। दादी जी स्वयं सदा सन्तुष्ट रहती थीं और उनके बोल थे, सभी यज्ञ-वत्स सदा खुश और सन्तुष्ट रहने चाहिए। किसी को कुछ भी चाहिए तो बाबा के भण्डारे से उसे अवश्य मिलना चाहिए, यह उनकी भावना होती थी।

दादी के हर कार्य में रचनात्मकता दिखाई दी

ब्र.कु.निर्वैर

दादीजी हम सबको सदा यही स्मृति दिलाती कि हम सभी भाई-बहनें परमापिता परमात्मा के सतयुगी सृष्टि स्थापन के कार्य को श्रीमत् अनुसार आगे बढ़ाने के निमित्त हैं, जिसका हमें बहुत गौरव होना चाहिए। संगठन के हर सदस्य के गुण व विशेषताओं को ध्यान में रखकर, हरेक के भिन्न-भिन्न विचारों को समन्वय करने पर बल देती थीं। एक-दो के विचारों को सम्मान देने के फलस्वरूप वो संगठन को आपसी स्नेह और एकता के सूत्र में बांध देती थीं। वर्तमान पुरुषोत्तम संगमयुग के अमूल्य समय को व्यर्थ न गंवाकर इसे रचनात्मक कार्यों में लगाने की प्रेरणा दादीजी देती थीं और सदा इस बात का ध्यान रखती थीं कि समय और शक्ति व्यर्थ न जाये क्योंकि इन शक्तियों के कारण ही संगठन सुचारू रूप से चलता है। दादीजी सर्व आत्माओं की सूक्ष्म आत्मिक शक्ति के विकास तथा उसके संगठित प्रयोग से असंभव को भी संभव करने पर बल देती थीं। जिसके लिए समय प्रति समय अखण्ड योग तपस्या (भट्ठी) के विशेष कार्यक्रम आयोजित करवाती थीं।

दादी में असम्भव को संभव करने की शक्ति थी

ब्र.कु.मृत्युंजय

दादी जी के संकल्प में इतनी शक्ति होती थी कि असंभव कार्य भी संभव हो जाता था। एक बार जब दादी बेंगलुरू आईं तो उन्होंने कहा कि विधानसभा के बेंक्वेट हॉल में हमारा एक कार्यक्रम होना चाहिए। वहाँ एक सम्मेलन का प्रबंध करो। उन दिनों वह हॉल किसी भी गैर सरकारी संस्था को नहीं दिया जाता था तो हमने दादी जी से कहा कि वे प्राइवेट संस्थाओं को वह हॉल नहीं देते। दादी जी ने कहा कि आप हिम्मत करो, प्रयत्न करो। बाबा बैठा है, मुख्यमंत्री से मिलो, संबंधित अधिकारियों, सचिवों से मिलो, काम हो जायेगा। बच्चों का एक कदम और बाबा के हज़ार कदम। ऐसे कहकर हम सब भाई-बहनों में उन्होंने उमंग भरा और हम सबने मिलकर ऐसा ही किया। मुख्यमंत्री और संबंधित अधिकारियों से मिलकर वह हॉल ले लिया और बहुत बड़े रूप में प्रोग्राम वहाँ किया। कार्यक्रम बहुत सफल रहा। उन दिनों ईश्वरीय इतिहास में यह एक विशेष प्रसंग था, यादगार घटना थी। उस सम्मेलन में केन्द्र सरकार और राज्य सरकार के अनेक मंत्री तथा लोगों ने भाग लिया था। इस सम्मेलन की सफलता का श्रेय आदरणीया दादी जी को जाता है।

बाबा का संदेश विश्व के कोने-कोने तक पहुंचाने की लगन थी

दादी सदा कहती थी मीडिया वाले शिवबाबा के राईट हैंड हैं। इन्हीं द्वारा सारे विश्व में ईश्वरीय संदेश पहुंचेगा। मीडिया वाले जब भी व्यक्तिगत रूप से या कॉन्फ्रेंस में आते थे तो दादी सबसे मिलती थी और आध्यात्मिक ज्ञान के बारे में उमंग-उत्साह दिलाती थी। आज भी वे जब यहां आते हैं तो दादीजी की उन स्मृतियों को याद करना नहीं भूलते। दादी जी का हंसमुख चेहरा व निश्छल स्नेह भरा व्यवहार आज भी वे भूला नहीं पाये हैं। कईयों को तो उनकी याद आते ही आँखें नम हो जाती हैं। दादी जी का उमंग सदा रहता था कि बाबा का संदेश सारे विश्व में पहुंचे। उसके लिए उन्होंने विश्व भर से 10,000 मीडिया वालों को बुलाने का संकल्प व्यक्त किया और उनका प्रबंध यहां करेंगे ऐसा वह सदा उत्साह दिखाती थी। उस समय भारत में सिर्फ दूरदर्शन चैनल था जिसमें धर्म-आध्यात्मिकता के लिए समय नहीं देते थे। पहले-पहले 'जी. टी.वी.' की सेवा शुरू हुई। उस समय बाबा का संदेश देने के लिए समय दिया गया । यह सुनकर दादीजी बहुत खुश हुई। और कहा कि शीलू बहन को ले जाओ। अर्थात् टी.वी. द्वारा ईश्वरीय सेवा का प्रारंभ दादीजी के समय से ही प्रारंभ हो गया था। जो आज सारे विश्व में पहुंच गया है। उनके संकल्प के बदौलत ही आज बाबा का 'पीस ऑफ माइंड' चैनल उपलब्ध हुआ।

ब्र.कु.करुणा

सेवा के विस्तार को देख दादी जी ने सर्व सेवा साथियों के बीच यह संकल्प रखा कि इन सेवाओं के समाचार से सभी लोगों को अवगत कराने के लिए एक अपना 'न्यूज पेपर' होना चाहिए। जो कि हर सप्ताह में सभी को मिल सके। तब सबकी राय से पंद्रह दिन में एक बार 'ओम शांति मीडिया' निकालने का निर्णय लिया गया। जो आज बाबा का संदेश विश्व के हर कोने में पहुंचा रहा है। यह सेवा दादी जी के होते ही वर्ष 1999 में शुरू हो गई थी।

किसी ने उन्हें एक कुशल प्रशासक के रूप में देखा तो किसी ने प्यार की मूर्ति के रूप में, किसी ने इस धरा पर अवतरित फरिश्ते के रूप में तो किसी ने उनके जीवन में कला और गुणों की खुशबू का अनुभव किया तो किसी ने सहारे का।

दादी का व्यक्तित्व चुम्बकीय था। उनसे हर कोई सहजता से मिलता। सभी को उमंग उत्साह दिलाना, आगे बढ़ाना, सिखाना यह सब नेचुरल उनके जीवन का प्रवाह बन कर रहा। ऐसी महान आत्मा की छठवीं पुण्यतिथि पर संस्था के वरिष्ठ भाई-बहनों के दादीजी के साथ ईश्वरीय सेवा में बिताए हुए अनमोल लम्हों का अनुभव ...

सत्यता की शक्ति से सम्पन्न

दादीजी में कमाल का बैलेन्स था। कोई भी बात होती थी तो समेटने के समय उसको समेट लेती थी और जब सामना करने की बात होती थी तो सामना भी करती थी। वे निर्णय लेने में देरी नहीं करती थी। सत्यता व पवित्रता की शक्ति होने के कारण उनमें निर्णय शक्ति बहुत प्रबल थी। निर्भयता से निर्णय लेती थीं किसी भी बात का उन्हें भय नहीं होता था। वे सभी को समान दृष्टि से देखती थीं उनमें पक्षपात की भावना नहीं थी। जो सत्य बात होती थी उसे वो कह देती थीं। सामने वाला चाहे कितना भी बड़ा व्यक्ति हो, चाहे वो कोई संत हो, महामण्डलेश्र हो, राष्ट्रपति हो या प्रधानमंत्री हो लेकिन दादी ऐसे बात करती थी जैसे वो उनकी छोटी बहन हैं, एकदम दादीजी निर्मानता व निरहंकारिता की मूरत दिखाई देती थीं। इसलिए जो भी उनके सामने आता था वो उनके निर्मल व निश्छल स्वभाव से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता था। दादीजी हमें भी अपनी सखी की तरह समझती थी और व्यवहार में आती थी। मैं दादी बृजेन्द्रा के साथ रहती थी। उनकी तबियत ठीक न होने के कारण मुझे ही सभी कार्य के लिए बाहर जाना पड़ता था। तो कभी किसी निर्णय पर पहुंचने के लिए मैं दादी बृजेन्द्रा से पूछती थी कि दादी क्या करना चाहिए ? तो दादी कहती थी कि बड़ी दादी से पूछो। और जब मैं बड़ी दादी को फोन करती थी तो दादी कहती थी कि संतोष, तुम मेरे को फोन कर रही हो, तुम्हारे पास इतनी बड़ी दादी बैठी है तो उनसे ही पूछो। इस तरह दादियां एक दूसरे को बहुत सम्मान व रिगार्ड देती थीं। दादी छोटों को भी प्यार व रिगार्ड देकर आप समान बना देती थी। बड़ों के साथ बड़ा और छोटे बच्चों के साथ दादी भी छोटे बच्चे समान उनसे खेलने लग जाती थी।

ब्र.कु.संतोष

अद्भुत प्रशासिका थीं दादीजी

ब्र.कु.बृजमोहन

दादी जी यज्ञ के सभी भाई-बहनों को यज्ञ की योग्यतम् अमूल्य निधि समझ कर उनसे बहुत ही मधुरता से स्नेहयुक्त व्यवहार करती थीं। वह प्रत्येक आत्मा को विशेष एवं योग्य समझ आत्मिक दृष्टि से देखती थीं। दादी जी कभी भी किसी आत्मा की कमजोरी को न देख सभी को उत्साहित करती रहती थीं और उन सभी के विशेषताओं की सदैव प्रशंसा करती रहती थीं। मधुबन में कभी भी कोई मेहमान आता था तो उसकी सुख-सुविधा का पूरा ध्यान रखती थीं। उनका सदैव उद्देश्य रहता था कि वह पूर्ण रूप से सन्तुष्ट होकर जायें। वह यज्ञ के सभी भाई-बहनों की आध्यात्मिक पालना के साथ-साथ शारीरिक रूप से भी स्वस्थ बनाये रखने की पालना करती थीं। वह सदैव स्वयं को आध्यात्मिक परिवार का मुखिया समझ कर सभी के साथ सद्भावना व स्नेह युक्त व्यवहार करती थीं। संस्था की मुख्य प्रशासिका होते भी दादी में जरा भी अभिमान नहीं था। वह सदैव ध्यान रखती थीं कि बाबा के कार्य में कहीं कोई कमी न रह जाये और साथ-साथ सभी को भी इसके लिये उत्साहित करती रहती थीं। वह यज्ञ के जटिल से जटिल कार्यों को भी पूर्ण विश्वास व समर्पण भावना के कारण सदैव मुस्कुराते हुए सहजता से कर लेती थी। वह एक अद्भुत आध्यात्मिक विश्वदूत थीं। उन्होंने विश्व के अनेकानेक स्थानों का भ्रमण कर आत्माओं को आध्यात्मिकता व आत्मिक स्नेह की अनुभूति कराई। दादी जी ने परमात्मा का परिचय व विश्व में शांति स्थापित होने का पैगाम दिया।

दादी जी के साथ संस्था की वर्तमान मुख्य प्रशासिका दादी जानकी।

सबको माँ समान पालना दी

जब बाबा ने यज्ञ की स्थापना के समय ओम निवास बनवाया, उसमें 80 बच्चों के लिए लौकिक व अलौकिक पालना की व्यवस्था करवाई। मैं उस समय सात वर्ष की थी। बाबा ने कहा कि इन पवित्र पौधों को सम्भालने के निमित्त केवल पवित्र कन्याएं होंगी। तो पांच कन्याओं को दादी प्रकाशमणि, दादी चन्द्रमणि, दादी शान्तामणि, मिट्ठू दादी और एक बहन को निमित्त बनाया। बड़ी दादी ने चौदह वर्ष की आयु में ही माँ की तरह, शिक्षिका की तरह बेहद स्नेह से पालना की। सदा बाबा के डायरेक्शन अनुसार ही बड़ी दादी हर कार्य और सेवा इतने दिल से करती थी कि सबको प्रेरणा मिलती थी उनके जैसा बनने की। दादी सदा ही अचानक फोन करती थी, कमलमणि, दादी तुम्हारे पास अभी आ रही है। और बहुत हक से, प्यार से दादी यहां आते थे और नई नई प्रेरणाएं और अपनी शुभभावनाएं, दिल की दुआएं देकर जाते थे। दादी सदा ही हँसाते और बहलाते थे। उमंग-उत्साह बढ़ाकर दादी अपने से भी आगे बढ़ने के लिए हमको प्रेरित करती। बचपन से ही दादी की पालना, दिल का स्नेह, वरदानी बोल और दृष्टि हम कभी नहीं भूल सकते। वाह बाबा! वाह दादी!

दादी कमलमणि

दादीजी का प्रशासन प्रेमपूर्ण था

ब्र.कु.ओमप्रकाश

प्राय: प्रशासन में कार्यकर्ताओं को सुचारू रूप से काम कराने हेतु दबाव और भय जरूरी होता है परंतु दादी जी ने कभी भी अपने जीवन में किसी को डांटा नहीं और सबको प्यार से सम्मान देकर चलाया। इस प्रकार उनके प्रेम के प्रशासन में सब पूरी लगन से एवं जिम्मेवारी से काम करते थे। पांचों महाद्वीपों में हजारों सेवाकेंद्रों की सचमुच में वह अद्भुत मुख्य प्रशासिका थी। दादी में एक बड़ी विशेषता थी कि उन्होंने जीवन में कभी भी झूठ नहीं बोला और न ही इसका सहारा लिया। उनके अंदर निर्भयता का गुण बहुत ही विशेष था। संस्था के अंदर अनेक बड़े-बड़े विघ्न आये परंतु दादीजी कभी डोलयमान या भयभीत नहीं हुई। और अपने आत्मबल से उन्होंने सारे विघ्नों पर जीत पाई। दादी जी के नेतृत्व में विश्व के कोने-कोने में सेवाकेंद्रों की स्थापना हो गई। विश्व की सर्वोच्च संस्था संयुक्त राष्ट्र तक दादीजी ने ब्रह्माकुमारीज़ को पहुंचाया।

निरहंकारिता की मूरत दादी जी

ब्र.कु.चक्रधारी

दादी जी प्रारंभ से ही यज्ञ में मिनी मम्मा के नाम से जानी जाती थी। मम्मा के साथ दादीजी ने भी माँ के रूप में पालना देने का सर्वोत्तम पार्ट बजाया।

दादीजी की निरहंकारिता की एक झलक इस घटना से अनुभव में आती है कि एक बार किसी कार्यक्रम में गेट पर खड़े भाई ने एसडीएम को कार्यक्रम में अंदर प्रवेश होने नहीं दिया। तो वे काफी नाराज हो गये और वहां एक बहस का वातावरण बन गया। तभी वहां से दादीजी गुजर रही थीं उन्हें जब बात का पता चला तो उन्होने एसडीएम को बड़े प्यार से सम्मान पूर्वक बात की और उस गेट पर खड़े भाई की तरफ से माफी मांगते हुए उन्हें अंदर चलने को कहा। एसडीएम को जब पता चला कि वे इस संस्था की मुख्य प्रशासिका हैं तो वह उनके समक्ष नतमस्तक हो गया। दादीजी नम्रता व प्रेमपूर्ण व्यक्तित्व से सबको अपना बना लेती थीं। एक बार रशिया के नौ भाई-बहनों का ग्रुप धन की वजह से भारत आने में असमर्थ था तो दादीजी ने उनके आने जाने की टिकट का खर्च देकर उनकी भारत आने की आश पूर्ण की।

दादीजी की कथनी व करनी एक समान थी

दादी जी एक ऐसी महान विभूति थीं जिनका जीवन ही एक खुली किताब बना, जिनका जीवन ही सन्देश बना, जिनके जीवन का एक-एक पन्ना पलटने से ही उमंग, उत्साह और साहस का स्वीच ऑन हो जाता है। कथनी और करनी को एक समान बनाकर दादी जी ने जीवन को, हर प्रश्न का उत्तर देने वाली डिक्शनरी बनाया। दादी जी सादगी और स्वच्छता की श्रृंगारी हुई प्रतिमूर्ति थीं। जीवन को त्याग और तपस्या से भरपूर कर ऐसा लाइट, माइट हाऊस बनाया जिससे चारों और प्रकाश ही प्रकाश बिखरने लगा। उसी प्रकाश से आज यह विश्व विद्यालय प्रकाशित हो रहा है। उनके नयनों में रूहानियत, वाणी में मधुरता, कर्मों में कुशलता थी।

ड्रामा अनुसार बाबा ने मुझे पटना सेवा के लिए भेजा। उस समय बाबा सेवा के हिसाब से ''सिन्धी गीता'' लिखना चाहते थे, जिसके लिए बाबा का बुलावा हुआ और दादी जी मधुबन गयीं। मुझे पटना के बहुत से भाई-बहनों द्वारा दादी जी के जीवन की अद्भुत शक्ति, गुण और विशेषताओं के बारे में सुनने को मिला।

ब्र.कु.राज

पटना में महासम्मेलन का आयोजन किया गया था, तब दादी जी के और समीप आने का चांस मिला। दादी से बहुत अपनेपन की महसूसता हुई। दादीजी की एक-एक करनी से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। आज भी उनका व्यक्तित्व हमारे लिए प्रेरणास्रोत है।

पवित्रता की मूरत दादीजी

ब्र.कु.आशा

भोली दीदी हमेशा कहती थीं कि दादीजी ने सभी को हड्डी सुख दिया है। यज्ञ वत्सों की आरंभ से ही पालना करने में ब्रह्मा बाबा व मम्मा का हर कदम पर साथ दिया था दादीजी ने। दादीजी की निस्वार्थ, निश्छल, निर्मल व पवित्र भावनाएं सहज ही सर्व को प्रभावित करती थीं। वे अपनी निर्मलता से सहज ही विरोधी को भी बाबा का सहयोगी बना देती थीं। एक संत जो ब्रह्माकुमारी बहनों का काफी विरोध करते थे। उन्हें कहीं भी देखता तो मुंह फेर लेते थे।

दादीजी ने मधुबन में एक विशाल संत सम्मेलन में उन्हें भी आमंत्रित किया। दादीजी के तप व उनकी महानता का अनुभव करते ही वह दादीजी के समक्ष नतमस्तक हो गया। उसने भरी सभा में कहा कि क्या दादी मुझे अपने छोटे भाई के रूप में मुझे स्वीकार करेंगी। दादी ने सभा में उन्हें राखी मंगवाकर बांधी।

भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति भैरोसिंह शेखावत दादी जी के संग एक समारोह में दीप प्रज्जवलित करते हुए।

भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम दीप प्रज्जवलन कर उद्घाटन करते हुए। साथ में दादी प्रकाशमणि।

तत्कालीन उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी दादी जी से आध्यात्मिक चर्चा करते हुए।

आन्ध प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री चन्द्रबाबू नायडू को ईश्वरीय सौगात देते हुए दादी प्रकाशमणि।

अखिल भारतीय सर्वधर्म सम्मेलन में जगद्गुरू व अन्य संतजन दादी प्रकाशमणि के साथ।

मारीशस के तत्कालीन प्रधानमंत्री अनरूद जगनाथ के साथ दादीजी।

दादीजी का अभिवादन करते हुए जगद्गुरू श्री शिवरात्रि देशीकेन्द्र।

महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री शरद पवार के साथ दादीजी।

आध्यात्मिक जीवन ...

-पेज 1 का शेष

महान बनाया, लाखों लोगों को प्रभु-मिलन कराया और परमात्मा के महान कार्य का सफलता व कुशलता पूर्वक संचालन किया। आज भी प्रतिदिन अनेकों के मानस पटल पर उनकी छवि उभर आती है और 25 अगस्त को तो सारा ब्राह्मण परिवार उनके प्रेम व अपनेपन को स्मरण करके भावविभोर हो जाता है। उनकी याद में निर्मित प्रकाश-स्तम्भ प्रतिदिन असंख्य ब्राह्मणों को योग की दिव्य अनुभूतियां कराता है।

कुशल प्रशासक के साथ वे समस्त ब्राह्मण परिवार की स्नेहमयी दादी भी थीं। आज उनकी अनुपस्थिति विशाल ब्राह्मण परिवार में एक रिक्तता का आभास कराती है। वे निर्मल, निष्काम व आत्मिक प्रेम की प्रतिमूर्ति थीं। प्यार बांटना उनका प्रमुख कर्त्तव्य था। जब लोगों से गलती भी हो जाती थी तो वे प्यार का प्रसाद देना नहीं भूलती थीं। उनकी शिक्षाओं में भी कल्याण का भाव व प्यार समाया होता था। वे चाहती थीं कि भगवान का ये परिवार पवित्रता व प्रेम से भरपूर हो। लगभग 20 वर्ष पूर्व पाण्डव भवन में महामण्डलेश्वरों का एक धर्म सम्मेलन रखा गया था जिसमें अनेक संत-महानात्माओं ने हिस्सा लिया। दादीजी ने सभी को अपने पावन प्रेम में बांध लिया था। विरोधी सहयोगी बन गये और ग्लानि करने वाले प्रशंसक बन गये। एक प्रसिद्ध महामण्डलेश्वर ने तो मंच से भरी सभा में कह दिया कि मैं तो पूरा जीवन बाबा को व दादी को गाली ही देता आया हूँ। आज मुझे पता लगा कि वे कितनी महान हैं। उन्होंने अपना अनुभव सुनाते हुए दिल को स्पर्श करने वाली बात कही कि आज सबेरे जब दादीजी हमें सारे आश्रम घुमा रही थी तो मैंने दादीजी का हाथ स्पर्श किया और मैं नतमस्तक हो गया दादीजी के पवित्र वायब्रेशन्स देखकर। ऐसी पवित्र आत्मा इस धरा पर ढूंढना भी असंभव है। आज से मैं दादी का भाई हूँ और दादी का जब भी बुलावा होगा, मैं दौड़ा चला आऊंगा। जितनी ग्लानि आज तक मैंने की है अब उससे सौ गुना प्रशंसा के पुष्प चढ़ाऊंगा। उन्हें इस तरह समर्पित होता देख, सभी धर्म धुरंधर नतमस्तक हो गये। ऐसी थी ब्राह्मण परिवार की आत्म दादी प्रकाशमणि।

वहुत वर्ष पहले की वात है। हमारा ये रूद्र यज्ञ बहुत छोटा था। प्रथम बार 45 पत्रकार हमारे एक छोटे से सम्मेलन में आये। हिस्ट्री हॉल में दादीजी ने शब्दों से उनका इतना भावभीना सत्कार किया कि वे मंत्रमुग्ध हो गये उनकी यात्रा की थकान उतर गई, उन्हें लगा कि दादी तो हमारी है और अगले ही दिन भारत के अनेक अखबारों में छपा - प्रेम की देवी, दादी प्रकाशमणि।

हम भोजनालय में सेवारत थे। हम छोटे थे, हमें भोजन बनाना नहीं आता था। वे प्रतिदिन पांच बार किचन आती थीं। हमें स्नेह देती थीं, पूछती थीं कि आज क्या बनाया है, भोजन देखती थीं व चखती थीं। कुछ सिखाना होता था तो अति स्नेह से व सिखाने की भावना से सिखाती थीं। हमसे गलती होती थी तो वे हमें डांटती नहीं थीं। हंसते-हंसते कहती थीं - आज तो ये डालना भूल ही गये। हम कभी-कभी नुकसान भी कर देते थे, परन्तु हमें समझाते हुए इतना हल्का कर देती थीं जो हम उस नुकसान की भरपाई में लग जाते थे।

हमने अत्यधिक सुख उस समय प्रतिदिन पाया, जब वे सबेरे भगवान के महावाक्य (मुरली) सुनाती थीं। उन्हें ये वरदान था। वे मुरली में रस भर देती थीं, सभा में परम आनंद की लहर छा जाती थी। हमारा वो एक घण्टा जैसे कि पावरफुल योग में बीतता था।

वे चलता-फिरता फरिश्ता थीं। प्रारंभ में वे यज्ञ के सभी विभागों में जाती थीं, उन्हें अपनापन देती थीं, सबसे पूछती थीं - कुछ चाहिए। उनके ये शब्द सुनकर सबकी चाहना ही लोप हो जाती थी। सभी आश्चर्यवत होकर उन्हें निहारने लगते थे जब वे बीस हजार की सभा में पूछती थीं - बोलो क्या खाओगे, आइसक्रीम खाओगे? सभी उनकी उदारता व अपनेपन के समक्ष सिर झुका देते थे। सचमुच वे ही योग्य पात्र थीं इस महान आत्माओं के विशाल परिवार की मुखिया बनने के।

लोग तो भगवान को प्यार करते हैं। अनेक ब्रह्मा-वत्स भगवान का प्यार पाने के इंतजार में रहते हैं, परन्तु हमने देखा भगवान स्वयं उन्हें न केवल प्यार करते हैं बल्कि उन्हें बहुत सम्मान देते हैं। निःसंदेह दादीजी भी श्रेष्ठ योगी थीं, परमात्म-प्यार में मगन रहने वाली थीं परन्तु बाबा का उनसे मिलन देखकर 'अबू मिन आदम' की कहानी मानस पटल पर उभर आती थीं। सुना होगा आपने - अबू के स्वप्न में एक फरिश्ता आया जिसके हाथ में एक लिस्ट थी। अबू ने पूछा, ये क्या है? फरिश्ते ने उत्तर दिया ये उन लोगों की लिस्ट है जो भगवान को बहुत प्यार करते हैं। अबू ने पूछा, इसमें मेरा नाम कहां है? 'सबसे अंत में' - यह कहकर फरिश्ता लोप हो गया। दूसरी रात एक लिस्ट के साथ फरिश्ता पुनः प्रकट हुआ और अबू ने पूनः पूछा, आज किनकी लिस्ट है? फरिश्ते ने फरमाया कि 'ये लिस्ट उनकी है जिन्हें भगवान बहुत प्यार करता है, इसमें सबसे ऊपर आपका ही नाम है,' यह कहकर फरिश्ता अदृश्य हो गया। यह सुनकर अबू प्रभु-प्रेम में मग्न हो गया।

ये वृतांत पूर्णतया सत्य है दादी प्रकाशमणि के लिए। क्यों उन्हें भगवान इतना प्यार करता था जो अव्यक्त होते समय बाबा ने उनका हाथ पकड़कर उन्हें अपनी समस्त शक्तियां दे दी थीं। क्योंकि वे निर्मल थीं, वे अनासक्त थीं, वे त्यागी व परोपकारी थीं। उनका चित्त सभी के लिए शुभ-भावनाओं से भरा था, वे निर्विकारी थीं। उन्होंने भगवान द्वारा रचित रूद्र यज्ञ को सफल बनाया था, उसमें आने वाले विघ्नों को समाप्त किया था। सचमुच वे यज्ञ रक्षक थीं। वे चाहती थीं कि प्रत्येक यज्ञ-वत्स संतुष्ट रहे, योगी बनकर रहे, व्यर्थ से मुक्त रहे। सब एक-दूसरे को सुख देते रहें, संतुष्ट करते रहें। सब यज्ञ सेवा से अपना भाग्य चमकाते रहें। हम यज्ञ-वत्स उनकी इन शुभ-कामनाओं को पूर्ण करके उनकी श्रेष्ठ पालना का रिटर्न देंगे।

हे विश्व की आधारमूर्त, आपको कोटि-कोटि नमन्! हे जहान के नूर, आपको बारम्बार नमन्। हे असंख्य आत्माओं के दिल के दीपक आपको शत् शत् नमन्। सारा विश्व आपका ऋणी है। हम इस पुण्य स्मृति पर आपको श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। आप समान सच्चाई व निरहंकारिता को धारण करते हुए आपके स्वप्नों को साकार करें।

आपकी खुशी आपके पास

क्या आप अशांत हैं, क्या आप अवसाद के दौर से गुजर रहे हैं, क्या आपके मिजाज को क्रोध ने वश कर लिया है, क्या आप तनाव से ग्रस्त हैं। क्या आपने कभी सोचा है मन की शांति के लिए रिमोट कंट्रोल आपके पास है। देखिए नॉन स्टॉप, बिना किसी विज्ञापन के, आध्यात्मिकता के गुह्य रहस्यों को स्पष्ट करता हुआ ''पीस ऑफ माइंड चैनल, आपके शहर में उपलब्ध है। Enquiry Mob. 8140211111 channel-697

'शांतिदूत युवा साईकिल यात्रा'

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के युवा प्रभाग द्वारा उज्जवल भारत के लिए 'शांतिदूत युवा साईकिल यात्रा' का अभियान भारत वर्ष के विभिन्न स्थानों पर आयोजित किया गया है। जिसका शुभारंभ 13-सितम्बर-2013 को दिल्ली से किया जाएगा। यात्रा के दौरान विभिन्न स्थानों पर क्लब्स, यूथ एसोसिएशन, युनिवर्सिटीज़, कोर्पोरेट सेक्टर्स, आर्म्स फोर्स, पुलिस, सी.आर.पी.एफ, महिला सुधार गृह, बाल सुधार गृह तथा मजदूर संगठन आदि में आध्यात्मिक जागृति के कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा।

सूचना- ओमशान्ति मीडिया में सेवा के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखने वाले भाइयों की आवश्यकता है। ईमेल, वेबसाइड तथा साफ्टवेयर की जानकारी रखने वाले भाई की भी आवश्यकता है। ईश्वरीय सेवा के इच्छुक भाई अपना पूरा डाटा इस ईमेल पर भेजें -

E-mail-
mediabkm@gmail.com,
Mob.-8107119445

सूचना

आप सभी भाई-बहनों की मांग पर राजयोग प्रवचन माला की पुस्तक 'राजयोग मेडिटेशन' नवीन संस्करण के साथ, भगवान कौन? की गीता का आध्यात्मिक रहस्य पुस्तक हैप्पीनेस इंडेक्स, कथा सरिता उपलब्ध है। इसे आप ओम शांति मीडिया, शांतिवन कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

राज्यपाल डॉ.एम.चेन्ना रेड्डी, दादी प्रकाशमणि को 'डॉक्टर ऑफ लिट्रेचर' की उपाधि से सम्मानित करते हुए।

24 अक्तूबर, 1986 : यू.एन.ओ.महासचिव जेवियर पेरेज से शान्ति पुरस्कार प्राप्त करती दादी।

तत्कालीन प्रधानमंत्री अटलबिहारी बाजपेयी दादी प्रकाशमणि से आध्यात्मिक चर्चा करते हुए।

पांचों द्वीपों में ...

पेज 12 का शेष

निदेशिका के रूप में दादी ने सैकड़ों कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किए, जिससे लाखों आत्माओं को आध्यात्मिक रूप से लाभ मिला।

1964 में इन्हें महाराष्ट्र जोन की संचालिका और उसके बाद 1968 तक महाराष्ट्र, गुजरात व कर्नाटक जोन की प्रभारी के रूप में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ।

सन् 1969 मे संस्था के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने अपने देहावसान की पूर्व संध्या पर दादी जी की अदम्य साहस, निष्ठा, ईमानदारी तथा विश्व कल्याण की सेवाओं में समर्पणता को देखते हुए, अपना हाथ दादी जी के हाथ में देते हुए, अपनी सर्वशक्तियां हस्तांतरित कर ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की बागडोर सौंपी। तब से लेकर जीवन के अंतिम क्षण तक वह संस्था की मुख्य प्रशासिका के रूप में कार्य करती रहीं।

अध्यात्म की ज्योति लेकर दादी जी ने देश ही नहीं विदेशों में भी प्राचीन भारतीय संस्कृति, सभ्यता और राजयोग के सिद्धान्तों को लेकर, उच्च जीवन शैली के लिए सभी को प्रेरित किया। दादी जी के कुशल संचालन में ईश्वरीय विश्वविद्यालय में व्यक्तित्व निर्माण की आभा इतनी तीव्र हुई, जिसके फलस्वरूप आज देश-विदेशों में आठ हज़ार ब्रह्माकुमारी आध्यात्मिक सेवाकेन्द्र स्थापित हुए और हज़ारों भाई-बहनों ने अपना जीवन ईश्वरीय कार्य के लिए समर्पित किया।

दादी जी के नेतृत्व में, समाज में शान्ति, सद्भावना, धार्मिक समरसता, भ्रातृत्व प्रेम जैसे मूल्यों की स्थापना के कार्य को देखते हुए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय को संयुक्त राष्ट्र संघ ने ग़ैर सरकारी संस्था के रूप में आर्थिक एवं सामाजिक परिषद की परामर्शक सदस्यता प्रदान की व युनिसेफ़ से जोड़ा

दादी के नेतृत्व में संस्थान द्वारा राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विराट रूप से चल रहे मानवीय कार्यों को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय को सन् 1985 में अन्तर्राष्ट्रीय 'शान्ति पदक' और दादी जी को सन् 1987 में सकारात्मक कार्यों के लिए 'शान्ति दूत सम्मान' से भी अभिनंदित किया। 5 राष्ट्रीय स्तर के भी शान्तिदूत पुरस्कार प्रदान किये। इसके अलावा, दादी जी को महामण्डलेश्वरों, सामाजिक संस्थानों, राज्य सरकारों ने विभिन्न पुरस्कार एवं सन्मान चिन्ह भेंट करते हुए उनकी सेवाओं की स्तुति की।

आध्यात्मिक शक्ति एवं बहुमुखी सेवाओं को देखते हुए, दादी प्रकाशमणि को 30 दिसम्बर, 1992 को मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय द्वारा राजस्थान के तत्कालीन राज्यपाल डॉ. एम.चेन्ना रेड्डी ने 'डाक्टरेट' की मानद उपाधि से विभूषित किया। उत्कृष्ट सामाजिक सेवाओं के लिए महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री शरद पवार ने उन्हें 'अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार-1994' भेंट किया।

दूरदृष्टा दादी जी ने राजयोग शिक्षा शोध संस्थान की स्थापना करते हुए विभिन्न वर्गों के सोलह प्रभागों का गठन किया। इनमें शिक्षाविद, युवा, मेडिकल, व्यवसाय, समाजसेवा, सांस्कृतिक, न्यायिक, प्रशासनिक, मीडिया आदि प्रभाग शामिल हैं। इनके अन्तर्गत अध्यात्म का समन्वय व शोध प्रारंभ हुआ। इसी के आधार पर संस्था अध्यात्म, प्राणी मात्र को समर्थ दिशा बोध देने में सक्षम बनी। ये प्रभाग अपने-अपने क्षेत्र में विश्व बन्धुत्व के बोध जगाने के लिए सक्रिय प्रयोग करते आ रहे हैं। ज्ञान-योग की तर्क संगत वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुति बुद्धिजीवियों के लिए वरदान सिद्ध हो रही है। दादी जी विभिन्न जाति, वर्ण, रंग-भेद को दूर करने हेतु विश्व के एक कोने से दूसरे कोने तक आध्यात्मिक चेतना की अग्रदूत बनीं। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वास, व्यसन एवं तनाव से मुक्ति के लिए अनेक अभियान चलाए। युवाओं व महिलाओं के उत्थान, सर्वांगीण ग्राम विकास के लिए आध्यात्मिक चेतना जागृत करने वाले असंख्य कार्यक्रमों का संयोजन किया।

दादी जी की आध्यात्मिक प्रतिभा से प्रभावित, विभिन्न राज्यों के राज्यपालों, मुख्यमन्त्रियों और महामण्डलेश्वरों ने दादी जी को आमंत्रित करके उनके उद्बोधन से लाखों लोगों को लाभान्वित करवाया तथा उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया। उनमें राजस्थान के राज्यपाल डॉ. एम.चेन्ना रेड्डी, महाराष्ट्र के राज्यपाल सी. सुब्रमणियम, आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमन्त्री चन्द्रबाबू नायडू, दिल्ली के मुख्यमन्त्री साहिब सिंह वर्मा, उड़ीसा के मुख्यमन्त्री बीजू पटनायक, जानकी वल्लभ पटनायक, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल विरेन शाह आदि उल्लेखनीय हैं। महाराष्ट्र, आसाम, उड़ीसा, कर्नाटक, गुजरात, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, छत्तीसगढ़ जैसे अनेक राज्यों में दादी जी को वरिष्ठ अतिथि के रूप में सम्मानित किया गया।

शिकागो में 'विश्व धर्म संसद' ने शताब्दी कार्यक्रम में मनोनीत अध्यक्षा के रूप में आमंत्रित कर, आशीर्वाद प्राप्त किया। सन् 2000 में जब दादी जी ईश्वरीय सेवार्थ अमेरिका गयीं, उस समय वाशिंगटन डी.सी. में स्टेट केपिटल बिल्डिंग के सामने मेयर ने दादी जी के करकमलों से वृक्षारोपण कर 'ओमशान्ति ट्री' नामांकित किया, साथ ही प्रतिवर्ष 10 जून को 'प्रकाशमणि दिवस' मनाने की उद्घोषणा की, जो आज भी यथावत् कायम है।

यूनेस्को ने दादी जी को अंतर्राष्ट्रीय शांति संस्कृति वर्ष के दौरान पीस मेनिफेस्टो 2000 के अंतर्गत भारत व 120 अन्य देशों से साढ़े तीन करोड़ व्यक्तियों के हस्ताक्षर जुटाने पर विशेष अवार्ड से सम्मानित किया। शान्ति एवं सद्भाव के संचार के लिए दादी जी के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय धर्मसम्मेलन का आयोजन शान्तिवन में विभिन्न तीर्थ स्थलों से निकाली गई यात्राओं के समापन पर किया गया। इसी प्रकार अन्य प्रदेशों में भी सर्व धर्म सम्मेलन, युवा सम्मेलन, नारी सम्मेलन एवं युवा यात्राओं का आयोजन उन्हीं की प्रेरणा का परिचायक था।

मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत दादी जी के निर्मल, पवित्र और प्रकाशदायी व्यक्तित्व से लाखों लोगों के जीवन में परिवर्तन आया। इनके सानिध्य में लाखों परिवार पवित्र, तनाव एवं व्यसनों से मुक्त, सुखी जीवन जीने की कला सीखकर अनेकों के लिए आदर्शमूर्त बने हैं। ऐसी आभामयी दादी को शत् शत् नमन।

नोबल पुरस्कार विजेता मदर टेरेसा के साथ आत्मियता से चर्चा करते हुए दादी जी।

नोबल पुरस्कार विजेता नेल्सन मंडेला को ईश्वरीय सौगात भेंट करती हुई दादी जी।

नेपाल के राजा विरेन्द्र वीर विक्रम शाह देव, दादीजी को मोमेन्टो देते हुए।

अखिल भारतीय सर्वधर्म सम्मेलन में संतजनों के साथ दादीजी एवं दादी हृदयमोहिनी

दादी गुणों और ...

-पेज 3 का शेष

विदेश यात्रा का कार्यक्रम बन रहा है, उसमें आपके मार्गदर्शन की ज़रूरत पड़ेगी। बड़ी दीदी के साथ मैं और ऊषा बहन आबू आये। जब अव्यक्त बापदादा से दादी जी की विदेश यात्रा के बारे में संदेश लिया गया तो अव्यक्त बापदादा ने दादी जी के साथ मुझे भी विदेश जाने का आदेश दिया। दादी जी के साथ चार मास से भी अधिक समय विदेश यात्रा पर जाने का सौभाग्य मिला। इस दौरान बहुत-सी बातें दादी जी से सीखी और दादी जी से माँ-बेटे का स्नेह और मार्गदर्शन प्राप्त किया। इस प्रकार दादी जी ने हमारे दिल में अलौकिक माता का स्थान पक्का किया।

दादी जी ने ही मुझे प्लेन में सेवा करना सिखाया

मुंबई से जब ईश्वरीय सेवा पर निकले तब दादी जी ने प्लेन में ही मुझसे पूछा, आप प्लेन में क्या करते हो। मैंने कहा, ऐसे ही बैठा रहता हूं, बाबा को याद करता हूं। तो दादी ने कहा, क्यों नहीं आप पत्र लिखते और सबको यात्रा का समाचार भेजते? उस समय फैक्स या ई-मेल तो थे नहीं, टेलिफोन बहुत महंगे थे। हमने पत्र लिखना शुरू किया। कैरो से हमारे साथ अमेरिका की बहुत बड़ी कम्पनी का डायरेक्टर साथ में था तो दादी जी ने हमें उनकी सेवा करने के लिए कहा। मैंने उन महानुभाव से पूछा, आप परमात्मा को मानते हो? उसने 'ना' कहा। मैं सोच में पड़ गया कि नास्तिक को अपना ज्ञान कैसे सुनाऊँ? मैं दादी जी के पास मार्गदर्शन के लिए गया और पूछा। दादी जी ने कहा, नैतिकता की बातें सबको पसंद आती हैं इसलिए साकार बाबा की मुरली से सिविल आई और क्रिमिनल आई की बातें करो। मैंने उस आत्मा को ये बातें बताई और फ्रेंकफर्ट पहुँचते-पहुँचते वह नास्तिक से आस्तिक बन गया।

दादी जी का दृष्टिकोण दूरांदेशी तथा सराहनीय था

अमेरिका में हम चार दिन ही थे तभी ईश्वरीय सेवार्थ अमेरिका में संस्था को रजिस्टर्ड कराने का सोचा गया। तब मैंने दादी जी से पूछा, क्या हम अमेरिका में संस्था को रजिस्टर्ड करायें, तब दादी ने कहा, मैं भारत में बड़ी दीदी से फोन करके पूछती हूं। मैंने दादी को कहा कि मुख्य संचालिका तो आप हैं, आप निर्णय करें। दादी ने कहा, नहीं रमेश, जो मधुबन में है, वही मुख्य संचालिका है क्योंकि मधुबन ही यज्ञ का मुख्यालय है। तो मैं मुख्य संचालिका होते भी मुख्यालय की स्वीकृति के बिना यहां पर संस्था को रजिस्टर्ड कराने की स्वीकृति नहीं दे सकती। फोन पर बड़ी दीदी से स्वीकृति प्राप्त करने के बाद ही बड़ी दादी ने मुझे रजिस्ट्रेशन के लिए कागज़ बनाने को कहा। मैंने कागज़ बनाये और उनमें वहाँ के भाई-बहनों के नाम ट्रस्टी के रूप में लिखे तब दादी की दूरांदेशी बुद्धि का विशेष अनुभव हुआ।

दादी जी ने कहा कि इसमें अपना भी नाम डायरेक्टर के रूप में लिखो। मैंने कारण पूछा तो दादी जी ने कहा, यह ट्रस्ट भले ही अमेरिका में रजिस्टर्ड है परंतु भारत के साथ इसके संबंध को कानूनी रूप देने के लिए भारत के प्रतिनिधि के रूप में ट्रस्टी मण्डल में आपका नाम होना जरूरी है। दादी जी के इस सुझाव पर मैंने अपना नाम वहाँ के ट्रस्टी मण्डल में लिखवाया। इस प्रकार विश्व सेवा प्रति भी दादी जी का दृष्टिकोण सराहनीय था। बाद में दादी जी ने मुझे जर्मनी, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, सिंगापुर, हांगकांग आदि स्थानों पर ईश्वरीय सेवा को कानूनी रूप देने के निमित्त बनाया।

मैं तो इन्कम टैक्स का वकील था, कानून की बातों को नहीं जानता था पर बापदादा की श्रीमत के आधार से मुझे यज्ञ सेवार्थ मकान खरीदने और अन्य संस्थाओं का निर्माण करने का सुअवसर भी दादी जी ने ही दिया। बाद में भारत आकर भारत के सभी मुख्य स्थानों पर भी दादी जी के साथ मेरा जाना हुआ। दादी जी ने हर जगह जाकर विदेश यात्रा के संस्मरण सुनाए।

यहाँ एक विशिष्ट अनुभव लिख रहा हूं। जब हम दिल्ली पहुँचे तो वहां करीब दो हजार भाई-बहनें आये हुए थे। कार्यक्रम के अंत में टोली बाँटने का प्रसंग आया। दादी जी ने कहा, मैं बहनों को और आप भाइयों को टोली बाँटो। वहाँ करीब 1200 बहनें और 800 भाई थे। मैं तो 800 भाइयों को टोली बाँटते थक गया, हाथ दर्द करने लगा। मैंने दादी को कहा, मुझे टोली बाँटने का अभ्यास नहीं है, मेरा तो हाथ थक गया, आपका क्या हाल है? दादी ने कहा, मुझे तो कुछ नहीं हुआ, मेरा तो टोली बाँटने का अभ्यास है। देवता माना देने वाला। आपको भी देने का अभ्यास करना चाहिए। इस प्रकार के कितने ही अनुभव दादी जी के साथ के हैं जिनको अगर लिखें तो एक बड़ी किताब बन जाये। ईश्वरीय सेवा के कारोबार में सक्रिय भाग लेने का मुझे और मेरे परिवार को जो भी अवसर मिला, उसके लिए दादी जी का कुशल नेतृत्व और रूहानी पालना ही निमित्त है।

पच्चीस अगस्त, 2007 के दिन हम सब आबू में ही थे। हमें दादी कॉटेज से फोन आया और मैं और ऊषा बहन कॉटेज पहुंचे और दादी जी को हम सब ने अंतिम विदाई दी। अपने स्थूल नेत्रों से एक आत्मा को स्थूल शरीर छोड़ते देखने का यह मेरा पहला अनुभव था। इस प्रकार दादी जी ने अंतिम श्वास तक मुझे नये-नये अनुभव कराकर अनुभवीमूर्त बनाया। दादी जी का आभार मानने के लिए मेरे और मेरे परिवार के पास कोई शब्द नहीं है और इसलिए ही इस पुस्तिका के अंदर इस लेख द्वारा मैं अपनी श्रद्धांजली दादी जी को अर्पित कर रहा हूँ।

पिताश्री ब्रह्मा बाबा के साथ दादीजी।

मातेश्वरी जगदम्बा के साथ दादीजी।

पिताश्री ब्रह्मा बाबा, मातेश्वरी जगदम्बा, दादा विश्वकिशोर के साथ दादीजी।

पाँचो द्वीपों में फैलाया आध्यात्मिक प्रकाश

अध्यात्म प्रज्ञा राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, एक ऐसी विदूषी सशक्त नारी का नाम है जिन्होंने सिद्ध किया कि नारी शक्तिस्वरूपा है। नारी में विद्यमान शक्ति को आध्यात्मिकता द्वारा पुनर्जागृत किया जाये तो वह समाज में महान क्रान्ति की नायिका बन सकती है। आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग द्वारा नारी ही शीतला, दुर्गा, सरस्वती और सन्तुष्टता की मणि सन्तोषी देवी बन सकती है, यह अपने जीवन द्वारा दादी प्रकाशमणि ने कर दिखाया। उन्होंने अपने नेतृत्व में भारत और विश्व के लगभग 130 देशों के लाखों बहनों - भाइयों के जीवन में अद्भुत परिवर्तन लाकर विश्व सेवा के लिए प्रेरित किया। दादी प्रकाशमणि ने अपने अनुपम मूल्यनिष्ठ जीवन, आध्यात्मिक शक्ति एवं प्रशासनिक दक्षता से ब्रह्माकुमारी संगठन में प्रेम, शान्ति, सत्यता, समरसता, सद्भावना, आत्मिक दृष्टि, वात्सल्य, करूणा जैसे जीवन मूल्यों को परमात्म शिक्षा और विश्वास से सुसज्जित किया।

दिव्यता की मूर्ति दादी प्रकाशमणि का जन्म सन् 1 जून 1922 में हैदराबाद सिन्ध (पाकिस्तान) में हुआ। वह बचपन से ही दिव्य आभा से आलोकित थी। सन् 1937 में विश्व के पालनहार परमपिता परमात्मा शिव ने हीरे जवाहरात के प्रतिष्ठित व्यापारी दादा लेखराज को परमात्मा के सत्य स्वरूप एवं भावी नई दुनिया का अलौकिक साक्षात्कार कराया। 'प्रजापिता ब्रह्मा' के दिव्य नाम से जाने जाते उन्हीं दादा जी ने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की स्थापना की। हैदराबाद के सुप्रसिद्ध ज्योतिषी की पुत्री रमा देवी 14 वर्ष की तरूण आयु में, इस संस्था के संस्थापक के संपर्क में आयी। उसे भी अनेक दिव्य साक्षात्कार हुए, जिसमें उन्होंने ज्योति स्वरूप शिव एवं नई सतयुगी दुनिया देखी। उन्हें वर्तमान विश्व, प्रकृति के प्रकोप, अणु शक्ति, गृह युद्ध आदि द्वारा परिवर्तन होने का भी दृश्य दिखाई दिया। रमा देवी के दूरदर्शी एवं भविष्यवक्ता लौकिक पिता को अपनी सुपुत्री के भावी जीवन के संकेत प्रारंभ से ही मिल गये थे। उन्हीं के अनुरूप यही रमादेवी आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति पर प्रकाशमणि कहलाईं।

रत्नप्रभा दादी प्रकाशमणि ने अपनी बाल्यावस्था से ही स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन की संकल्पना के साथ इस संस्थान की आध्यात्मिक क्रान्ति में अपने आपको प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के सम्मुख पूर्ण रूप से ईश्वरीय कार्य में समर्पित कर दिया। अपनी निर्मल, कुशाग्र बुद्धि और सत्यता की पहचान के कारण ब्रह्माकुमारी संगठन में प्रेरणा और उदाहरणमूर्त बनी। इनकी अलौकिक शक्ति को पहचानकर प्रजापिता ब्रह्मा ने छोटी आयु की दादी प्रकाशमणि, अन्य कुमारियों और माताओं का संगठन बनाकर, अपना सब कुछ ईश्वरीय कार्य में समर्पित किया। तब से दादी प्रकाशमणि, इस संस्था में एक आदर्श ब्रह्माकुमारी तथा संस्था की स्थापना-स्तम्भ के रूप में आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग को प्रस्तुत करने में एक अनुपम प्रेरणास्रोत बनीं। संस्थान में समर्पित होने के बाद कुछ ही समय में उन्होंने स्वयं का एक कुशल, तेजस्विनी, तीव्रगामी पुरूषार्थी के रूप में प्रस्तुत किया और मानवीय मूल्यों से सुसज्जित प्रकाशस्तम्भ बन कर उभरीं।

सन् 1954 में पिताश्री ब्रह्मा बाबा ने जापान में हुए द्वितीय विश्व धर्म सम्मेलन में वक्तव्य देने हेतु आपको भेजा। दादी ने थाईलैन्ड, इन्डोनेशिया, हांगकांग, सिंगापुर, श्रीलंका, मलेशिया आदि देशों में छः माह तक भ्रमण करके हज़ारों भाई-बहनों को ईश्वरीय संदेश देकर परमात्म कार्य में सहयोगी बनाया।

दादी की दिव्य बुद्धि, वक्तृत्व कला और योग की पराकाष्ठा को देखते हुए प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने इन्हें भारत के विभिन्न स्थानों पर ईश्वरीय सेवाओं हेतु भेजा। इनके सद्प्रयास से दिल्ली, मुम्बई, अमृतसर, कानपुर, कोलकाता, पटना, बैंगलोर आदि महानगरों में ईश्वरीय सेवाकेन्द्रों की स्थापना हुई। पांच वर्ष तक मुम्बई राजयोग केन्द्र की

-शेष पेज 10 पर

भारत - वार्षिक 170 रुपये
तीन वर्ष 510 रुपये
आजीवन 4000 रुपये
विदेश - 2000 रूपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट माउण्ट आबू) द्वारा भेजें ।

ओम शान्ति मीडिया
सम्पादक : ब्र.कु.गंगाधर
ब्रह्माकुमारीज, शांतिवन, तलहटी
पोस्ट बॉक्स नं. - 5, आबू रोड (राज.) 307510
Enquiry For Membership, Mob. No. - 09414006096
(M)- 9414154344, E-mail : mediabkm@gmail.com,
omshantimedia@bkivv.org, webside:www.omshantimedia.info

प्रति

RNI NO RAJHN/2000/721, NEWS PAPER TO POST CONCSSIONAL REGISTRATION NO. RJ/SIROHI/9623/12-14, 12TH TO 14 TH, 22 ND TO 24TH POSTED TO SHANTIVAN POST OFFICE
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, सलाहाकार संपादक: कमल दीक्षित, प्रकाशक: ब्र.कु.करूणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज् मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ.) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट साल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।